छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास पौष–माघ, संवत् 2070
जनवरी 2014

ओ३म्

अंक 102, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

गणतन्त्र दिवस की हार्दिक शुभकामनायें

26 जनवरी गणतंत्र दिवस पर विशेष

क्या यही गणतंत्र है?

लाज से पलके झुकाए देश के हिम खण्ड हैं।
जल रहा है शौर्य अब तो संयमों के कुण्ड हैं,
स्वार्थ के अंधड़ में बनकर तृण उड़ी संवेदना,
मांग सूनी रह गयी विधवा, बनी हर कल्पना,
है विधुर हर गीत टूटा, भावना का तंत्र है।
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है।।

संस्कृति के द्वार पर, अब नीति की सांकल नही।
आस्था के शीश पर, श्रद्धा का है ऑचल नहीं,
नग्न स्वागत को खड़ी, है देश में निर्लज्जता,
अब पुरातत्वों में ही है, शेष अपनी सभ्यता,
देह तो स्वतंत्र लेकिन, आत्मा परतंत्र है
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है।।

अब अनाथों की तरह, हर स्वप्न पलते नैन में।
प्रेरणा है खो गयी, अंधकारमय इस रैन में,
शौर्य साहस के कथानक, गूलरों के फूल हैं,
क्षितिज पर सम्भावना की, उड़ रही अब धूल है,
भ्रष्ट कर में खेलती, यह देश भक्ति यंत्र है।
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है।।

है यही उपलब्धि अपनी, निर्धनों की झुग्गियाँ।
रेशमी बिस्तर पर टूटी, अनगिनत है चूड़ियाँ,
करकटों में खोजता, रोटी मुझे बचपन मिला,
सो रहा फूटपाथ पर, इस देश का यौवन मिला,
किस तरह बोलें कि, हम तो हो गए स्वतंत्र हैं।
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है।।

वह फसल आतंक की, घर में हमारे बेचते।
बैठ दर्शक दीर्घा में, हम तमाशा देखते,
अब तो हर नेतृत्व, बन बैठा मृग मरीचिका,
चित्र सारे हैं अधूरे, खो गयी है तूलिका,
पृष्ठ पर सत्ता है केवल, हाशिया जनतंत्र है
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है।।

: प्रेषक :
श्री तपोधन गड़तीया, बड़दलींपाली बरगड़ (उड़ीसा)

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७०
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११४
दयानन्दाब्द - १९०

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ८८२७७५०४७८)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री अवनीभूषण पुरंग
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९८९३०६३९६०)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८)२३२२२२५, ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

वर्ष - ०९, अंक ७ ओ३म् मास/सन् -जनवरी २०१४

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्ञसज्ञकम्,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे।।

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वेदामृत : प्राणों का कर्त्तृत्व	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : गणतंत्र की ५४वीं वर्षगांठ - बनाम-उपनिवेशवादी शिक्षा	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	भारतीय संविधान का सच	आचार्य आर्य नरेश आर्य	०७
४.	सदाचार बनाम समलैंगिकता	डॉ. विवेक आर्य	१०
५.	यह कैसा नयावर्ष है ?	डॉ. दिव्येश्वर शास्त्री	१३
६.	गत-जन्म की स्मृतियाँ पुनर्जन्म को सिद्ध करती है।	महात्मा चैतन्य मुनि	१५
७.	अपने परिवार को जहर न दें .	श्री ओमप्रकाश बजाज	१८
८.	गौ रक्षा को महत्व दे भारत सरकार	डॉ. विजेन्द्रपाल सिंह	१९
९.	करुणामूर्ति दयानन्द	प्रोफे. मोनिका आर्या	२१
१०.	युवा पीढ़ी का बढ़ा रुझान	श्री अर्जुनदेव चड्ढा	२३
११.	पंजाब केशरी लाला लाजपतराय	डॉ. भवानीलाल भारतीय	२४
१२.	वैदिक दर्शन, आरोग्य और होमियोपैथी	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२६
१३.	आयुर्वेद से आरोग्य	श्री दीनानाथ वर्मा	२७
१४.	भ्रूण हत्या महापाप	वान. सत्यनारायण आर्य	२८
१५.	कविता : बेटियाँ	कु. समीक्षा आर्या	२८
१६.	समाचार दर्पण		२९

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का परिवर्त्तित अणुसंकेत (ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिन्टर्स, मॉडल टाऊन भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

वेद
वेदामृत

प्राणों का कर्तृत्व

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

वेद
वेदामृत

न स जीयते मरुतो न हन्यते, न स्त्रेधति न व्यथते न रिष्यति।
नास्य राय उप दस्यन्ति नोतयः, ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथ॥ ऋग्. ५,५४,७

ऋषिः **श्यावाश्वः आत्रेयः**। देवता **मरुतः**। छन्दः **जगती**।

● (मरुतः) हे प्राणो ! (तुम) (यं) जिस (ऋषि वा) ऋषि को (राजानं वा) या राजा को (सुषूदथ) प्रेरित या रक्षित करते हो, (सः) वह (न जीयते) न जीता जाता है, (न हन्यते) न मारा जाता है, (न स्त्रेधति) न क्षीण होता है, (न व्यथते) न व्यथित होता है, (न रिष्यति) न हानि प्राप्त करता है, (न) न (अस्य) इसकी (रायः) सम्पत्तियाँ (उपदस्यन्ति) क्षीण होती है, (न) न ही (ऊतयः) रक्षाएँ।

● **प्रा**ण मनुष्य-शरीर में एक बड़ी सबल शक्ति है। प्राण-रुप अश्व ही इस शरीर-रथ को वहन कर रहा है। उपनिषद् के ऋषि कहते है कि एक बार देहस्थ सब शक्तियों में विवाद उपस्थित हो गया कि हममें कौन बलिष्ठ है। चक्षु, श्रोत्र, मन आदि सब स्वयं को बड़ा कहने लगे। वे प्रजापति के पास निर्णय के लिए पहुंचे। प्रजापति ने उन्हें एक सूत्र बताया कि जिसके शरीर के निकल जाने पर शरीर दरिद्रतर हो जाये, वही तुममें सबसे बड़ा है। सबने क्रमशः परीक्षा की। चक्षु, श्रोत्र, मन आदि के एक-एक कर निर्गत हो जाने पर भी शरीर पूर्ववत् सजीव बना रहा, केवल उस-उस इन्द्रिय के व्यापार से शून्य हो गया। परन्तु जब प्राण शरीर से निकलने लगा, तब जैसे कोई बलवान् घोड़ा निकलते समय बन्धन के खूंटों को भी अपने साथ उखाड़ ले जाता है, वैसे ही प्राण चक्षु आदि इतर इन्द्रियों को भी अपने साथ ले जाने लगा। तब सब इन्द्रियों ने प्राण का सिक्का मान लिया कि तुम्हीं हम सबमें बलिष्ठ हो।

हे प्राणो ! तुम जिस जन के, जिस ऋषि के, जिस राजा के अनुकूल हो जाते हो, जिसे तुम्हारी प्रेरणा और रक्षा प्राप्त हो जाती है, उसे कोई जीत नहीं सकता, उसे कोई मान नहीं सकता, उसे कोई क्षीण नहीं कर सकता, उसे कोई व्यथित नहीं कर सकता, उसे कोई हानि नहीं पहुंचा सकता। प्राणों का आयाम करने से ऋषि का ऋषित्व स्थिर रहता है, राजा का राजत्व अक्षुण्ण रहता है। राष्ट्र में जो कार्य वीर क्षत्रिय करते हैं, वही कार्य शरीर में प्राणों का है। प्राणमय कोष की सम्पदा को सुरक्षित रखने से, प्राणायामादि द्वारा प्राण को बलवान् बनाते रहने से, मानव-शरीर की कोई सम्पत्ति क्षीण नहीं होती, अपितु वह सुरक्षित और प्रफुल्ल बनी रहती है। प्राण के निग्रह से इन्द्रियादि के दोष वैसे ही नष्ट हो जाते हैं, जैसे अग्नि में तपाई जाती हुई धातुओं के मल दग्ध हो जाते हैं। अतः आओ, हम भी अपने प्राणमय कोष को समृद्ध करें।

पता - गीता आश्रम, वेद मंदिर, ज्वालापुर, हरिद्वार (उत्तराखंड)

संस्कृतार्थ :- १. सुषूदथ क्षारयथ प्रेरयथ सत्कर्मसु (षूदक्षरणे) (सायण)। रक्षथ (द भा)। २. स्त्रिध हिंसार्थः। ३. रिष हिंसायाम्। ४. उप दसु उपक्षये।

सम्पादकीय

गणतन्त्र की ६४वीं वर्षगाठ-बनाम-उपनिवेशवादी शिक्षा

शिक्षा व्यक्ति, समाज और देश की ही नहीं, बल्कि जीवन के निर्माण की एक प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के ज्ञान में अभिवृद्धि तो करती ही है, लेकिन उसके साथ-साथ उसके हृदय और मस्तिष्क के कपाट भी खोलती है। वह व्यक्ति के दिल में निर्माण की भावना और तड़पन पैदा करती है। यह तो एक शाश्वत प्रश्न है कि शिक्षा का आविर्भाव पहले हुआ या निर्माण की प्रक्रिया पहले शुरू हुई, यह प्रश्न ठीक उसी तरह अनुत्तरित है जिस तरह इस बात का फैसला होना मुश्किल है कि पहले फल हुआ अथवा बीज ? ठीक इसी तरह का एक और सवाल है -पहले शिक्षा में गिरावट आयी अथवा सभी ओर अस्थिरता-अनिश्चितता पहले पैदा हुई ? लेकिन यह क्या हैरत की बात नहीं, कि आज सभी ओर शिक्षा व साक्षरता का तेजी से प्रसार तो हो रहा है, लेकिन उसकी तुलना में इन्सानियत की भावना कमतर हो रही है, जीवन में कुण्ठा व निराशा बढ़ रही है। उससे अपराध पनप रहे हैं, असुरक्षा की भावना पनप रही है। शिक्षा के साथ बेरोजगारी बढ़ती है और उसके साथ अन्य समस्यायें . यह कैसी शिक्षा है, जो व्यक्ति को बेकार, निष्क्रिय और आत्मविश्वासहीन बनाती है? ऐसी शिक्षा में जरूर कोई खोट है, यह शिक्षा की या नीतियों की दिशाहीनता का नतीजा है। आजादी के ६७ साल बाद भी यह हालत होना आश्चर्यजनक भी है और खेदजनक भी।

हमारे देश में आजादी के संघर्ष के दौरान देश के नेताओं ने यह निश्चय व्यक्त किया था कि क्लर्कों का उत्पादन करने वाली, व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक दृष्टि से गुलाम बनाने वाली शिक्षा-पद्धति में परिवर्तन लाया जायेगा, लेकिन आज भी शिक्षा का वही उपनिवेशवादी ढांचा बरकरार है। तमाम योजनाओं के बाद भी भावी पीढ़ी का निर्माण इस हालात में है कि जीवन और आचरण के बीच बड़ी खाई मौजूद है। दुर्भाग्य से हमारे देश में शिक्षा का ज्यादातर मतलब लड़के के लिए नौकरी और लड़की के लिए अच्छे वर की प्राप्ति करने तक ही सिमट कर रह गया है। शायद इसके आगे हम शिक्षा की उपयोगिता और महतत्व की बात सोचते ही नहीं है।

इससे भी बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि आजादी के ६७ साल बाद भी देश में शिक्षा की बार-बार नयी नीति तो बनती है, पर उस पर अमल नहीं होता। देश की योजना में शिक्षा को कोई प्राथमिकता भी प्राप्त नहीं है। बिजली, सिंचाई, कृषि और उद्योगों को सब से ज्यादा प्राथमिकता दी गई है, नौकरशाही भी महतत्वपूर्ण बन गयी है, लेकिन इस सारे काम को करने वाले योग्य और संकल्प वाले लोग जहां से मिलेंगे, उसके निर्माण की किसी को चिन्ता नहीं है, उसको कोई प्राथमिकता देने को तैयार नहीं है और यही सबसे बड़ी त्रासदी है। उपनिवेशवादी व्यवस्था का यह असर अब तक बरकरार है। अंग्रेजी शासनकाल में सबसे बड़ी प्राथमिकता रेवेन्यू और पुलिस विभागों को दी जाती थी। पुलिस की जगह इसलिए थी कि डंडे के बल पर यहां के लोगों को काबू में रखा जा सके और रेवेन्यू की इसलिए कि उस समय जमीन का लगान ही सरकारी आमदनी का सबसे बड़ा जरिया था। आज भी देश में पुलिस और नौकरशाही को सबसे ज्यादा प्राथमिकता प्राप्त है। साहब तो आज भी साहब है और किसान आज भी हेय दृष्टि से देखा जाता है। यह उपनिवेशवादी प्रवृत्ति हमारे चिन्तन से अभी तक खत्म नहीं हुई। मनुष्य-निर्माण की महतत्वपूर्ण विद्या के प्रति गंभीरता की यह कमी चिन्तनीय है।

शिक्षा पर कुछ ध्यान तो दिया गया। कई शिक्षा आयोग भी बने। कुछ साल पहले देश में दो शिक्षा आयोग शिक्षा की समस्याओं, शिक्षकों की परिस्थितियों और निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के उपाय पर विचार कर रहे थे। उनकी रिपोर्ट भी आयी है। इससे पूर्व भी तीन शिक्षा आयोग बन चुके है, **राधाकृष्णन् आयोग, मुदलियर आयोग व कोठारी आयोग**, लेकिन इन आयोगों की रिपोर्टों पर धूल जमती रही है। हालत तो यह है कि नयी-नयी घोषणाओं के बाद भी देश की शिक्षा दिशाहीन और लक्ष्यहीन रास्ते पर बेतहाशा दौड़ रही है। शिक्षा की दुकानें खुल गई हैं या खुलती जा रही है और यहां लूट सके तो लूट का स्वर प्रबल है। नकलबाज और उनके सहयोगी क्या किसी जीवंत राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं ? शिक्षा के मामले में स्थिति शायद ऐसी है कि हमारी कोई स्पष्ट नीति नहीं है। कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं है। कोई दिशा नहीं है। व्यक्ति और समाज के उत्कर्ष तथा उसके बौद्धिक विकास का कोई सुस्पष्ट दृष्टिकोण नहीं है। यानी कुल मिलाकर भटकाव

की स्थिति विद्यमान है। इससे भावी पीढ़ी भटक रही है। वह पीढ़ी भटक रही है, जिसे कल देश की बागडोर संभालनी है। इस रास्ते से निकले जो लोग शिक्षा, राजनीति, प्रशासन, व्यापार, उद्योग में आये हैं उन्हें देख लीजिये और उनकी शिक्षा का अंदाजा लगा लीजिये। शायद शिक्षा के दोष के कारण ही कई लोग कलम या औजार की जगह हाथ में पत्थर और मन में श्रद्धा व निष्ठा की बजाय नफरत लिए घूमते हैं। जीवन-मूल्यों में आई गिरावट से माहौल में और बिगाड़ आया है। जीवन के हर क्षेत्र में गिरावट के दर्शन होते हैं। जब शिक्षा में भटकाव होगा तो उस भटकाव के रास्ते से समाज और जीवन में उतरने वाली पीढ़ी को भटकाव से कैसे बचाया जा सकता है ? इसके नतीजे भी आज सामने है। राजनीति भ्रष्ट है। आर्थिक जीवन भ्रष्टाचरण से ग्रस्त है। चारो ओर शोषण व विषमता व्याप्त है। व्यापार जगत् में कालाबाजारी तथा मुनाफाखोरी हावी है। डाकुओं या उपद्रवी तत्वों के आगे कई बार सरकार झुक जाती है। कानून की कोई परवाह नहीं करता। मानो अराजकता सभी ओर सिर उठा रही है। कानून का राज्य या रामराज्य की कल्पना भी कोई नहीं करता। देशभक्ति और चरित्र को हेय दृष्टि से देखा जाता है। लोगों में विश्वास, आत्मविश्वास, चरित्र, निष्ठा व श्रद्धा की भावनायें डिग गई लगती है। देश में शिक्षा-प्रसार के बावजूद दहेज, विषमता, छुआछूत, जातिवाद, भाषावाद, प्रांतवाद, क्षेत्रीयता, साम्प्रदायिकता जैसी बुराईयां भी बढ़ रही है। यानी देश में साक्षरता तो बढ़ी है, लेकिन वास्तविक शिक्षा घटी है। डिग्री की जमाखोरी ही सही शिक्षा की कसौटी नहीं हो सकती। शार्टकट और घटिया तरीकों से लक्ष्य पाने की दौड़ में यदि लक्ष्य मिल भी जाये तो उसे टिकाये रखने की योग्यता नहीं रहती, उसे टिकाये रखने के लिए फिर गलत तरीके अपनाये जाते हैं।

शिक्षा के लिए बड़े-बड़े भवन तो बने हैं, आकाश छूने वाली बहुमंजिली बिल्डिगें भी बनी है, लेकिन लगता है मानो वह निष्प्राण है। शायद इस तरफ पूरी गंभीरता से किसी का ध्यान नहीं है। यदि गया है तो इस रोग का पुख्ता इलाज नहीं हुआ है। शिक्षा केन्द्रों में ज्ञान व भक्ति का अनुष्ठान जरूरी है। भाव और भावना भी जरूरी है। अच्छे जीवन की जिजीविषा, संकल्प और संघर्ष की तैयारी भी जरूरी है। निर्माण का ऐसा व्यापक दृष्टिकोण आज की सबसे बड़ी जरूरत है। हम यह जानते हैं कि शिक्षा मानव को आगे बढ़ने और ऊंचा उठाने का संकल्प जगाये और उस रास्ते पर लगातार चलते रहने का विवेक पैदा करे। उस रास्ते में आने वाली अड़चनों को पार करने का ज्ञान एवं विवेक जगाने का काम करे। जीवन की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए विश्वास, आत्मविश्वास और साह स का भाव संचारित करे। उस पर विजय पाने का संकल्प मजबूत करे। निराश करने वाली प्रवृत्ति को ठोकर मारने का एवम् आशा का भाव कूट-कूट कर भरे। लेकिन आज का जो ढांचा एवं व्यवस्था है, वह असंतुलित है। भ्रष्टाचरण, अनुशासनहीनता, मौकापरस्ती, स्वार्थ और आपसी द्वेष के रहते व्यक्ति में ऊँचा उठने के संचारी भाव कैसे पैदा हो सकते हैं ? आचार और विचार का संतुलन कैसे बैठ सकता है ? हृदय और मस्तिष्क का मेल कैसे बैठ सकता है ? उज्ज्वल भविष्य की किरण कैसे दीख सकती है ? इसलिए इस बात का विचार जरूरी है कि शिक्षा कौन सी दी जाये ? किस प्रकार दी जाये ? ज्ञान भी दिया जाये और उसके साथ-साथ भक्ति का भाव भी जगाया जाये। जीवन की दिशा भी निर्धारित की जाये और उस पर बढ़ने का संकल्प भी मन में जगाया जाये। यदि यह सब न कियागया तो हमारी शिक्षा से भावी प्रोफेसर, शिक्षक, डाक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस., आई.पी.एस., मन्त्री, सचिव, क्लर्क, व्यापारी, किसान, मजदूर कैसे मिलेंगे ? इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। नकल करके डाक्टर बना व्यक्ति बीमारी का क्या इलाज करेगा ? सिफारिशी इंजीनियर कैसा पुल बनायेगा ? ऐसा मन्त्री कैसे फैसले करेगा ? यह विचार जरूरी है।

आज सब ओर धन कमाने की होड़ लगी है। धन ही तो जीवन नहीं है। वह धन खर्च किस प्रकार हो, इसके लिए विवेक जरूरी है। इन सब पहलुओं पर देश के कई मनीषियों ने विचार किया है और अपनी सीमाओं के अन्तर्गत अपने क्षेत्र के भावी युवकों को तैयार करने के लिए उन्होंने जगह-जगह अच्छे शिक्षण संस्थानों की नींव डाली है। शिक्षा देना और लेना दोनों ही तपस्या है। यह काम केवल सरकार का नहीं, समाज का भी है। हम अच्छी शिक्षा-संस्थाएँ बनायें, ताकि जो ज्योति वहां जगायी जाये, वह घर-घर और हृदय-हृदय में पहुंच सके। यही आज की जरूरत है। अच्छी शिक्षा-संस्थाएँ ही देश में नये विश्वास को और नई पीढ़ी की कर्म-शक्ति को जगाकर निर्माण का नया अध्याय शुरू कर सकती है। स्वामी दयानन्द ने कहा था - आओ, मनुष्य बनें। पहले मनुष्य का निर्माण करो। देश को व्यक्ति चाहिए। निष्ठावान् व्यक्ति की ही सबसे बड़ी जरूरत है। गरीबी और दिशाहीन कायर युवक ही सबसे बड़ी समस्या है। आज की सभी समस्याओं का उत्तर है, व्यक्ति-निर्माण, और यह काम शिक्षा-मन्दिरों द्वारा ही सम्भव है। चाहे सरकार यह काम करे या समाज या दोनों। दोनों की ही यह जिम्मेदारी है। सही शिक्षा ही व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र-जीवन का कल्याण और उत्थान कर सकती है। ●

– आचार्य कर्मवीर

गणतन्त्र दिवस पर

भारतीय संविधान का सच

क्या पाखण्ड, लूटमार, कत्लेआम, आगजनी, पशुहिंसा व मानवों में फूट फैलाने वाला मजहब धर्म हो सकता है ?

- आचार्य आर्यनरेश
वैदिक गवेषक

हमने इस्लामिक-आतंकवाद, मजहबी झगड़े एवं गौ आदि प्राणियों की हत्या को रोकने हेतु न चाहते हुए भी आर्यावर्त (भारत) के बटवारे को स्वीकार किया। अत्यन्त दुःख एवं चिन्तन का विषय है कि मुसलमानों की पूर्ण उन्नति हेतु बने पाकिस्तान में उको मजहब एवं जीवन की पूर्ण सुरक्षा मिली पर हिन्दुओं को नहीं। तथाकथित स्वतन्त्रता के ६७ वर्ष पश्चात् भी झूठी धर्मनिरपेक्षता के कारण भारत के मूल नागरिक, उनकी वैदिक संस्कृति तथा गौ आदि पशु भी सुरक्षित नहीं है। इस्लामिक आतंकवाद के कारण गत वर्षों में हजारों हिन्दू मौत के घाट उतारे जा चुके हैं। यही स्थिति धर्ण के नाम पर फैले पाखण्ड की भी है। जिसने जादू-टोने के नाम पर अनेकों मनुष्यों तथा पशुओं को या तो मौत के मुंह में पहुंचा दिया है अथवा अनेकों योग्यों नागरिकों को छुआछूत, भाग्यवाद तथा चमत्कारों के नाम पर विधर्मी, आलसी, प्रमादी तथा निकम्मा बना दिया है। जब भी राष्ट्र पर कोई मुसीबत आती है अथवा राष्ट्र की अस्मिता लुटने लगती है तब उसके लिए कुछ समाधान करने की अपेक्षा यहाँ की जनता यह कहकर चुप्पी साध लेती है कि यह सब तो ईश्वर की ही लीला है।

भारत को आतंकवाद तथा पाखण्ड के मुंह में धकेलने का मुख्य कारण संविधान की धारा २५ को न समझकर नेताओं तथा मजहबी लोगों द्वारा फैलायी गयी झूठी धर्मनिरपेक्षता है। सत्य तो यह है कि भारत का संविधान भारत के प्रत्येक नागरिक को पाखण्ड एवं अंधविश्वास को छोड़कर वैज्ञानिक तथा तार्किक मादा रकने का उपदेश करता है। इतना ही नहीं अपितु भार के संविधान में धर्मनिरपेक्षता का नामोनिशान नहीं है। क्योंकि संविधान के हिन्दी अनुवाद में सेकुलर शब्द का अर्थ धर्मनिरपेक्ष न करके मतनिरपेक्ष किया है। यदि भारत का संविधान धर्मनिरपेक्ष होता तो उसमें दिये गये भारत सरकार के छापे अथवा मोहर पर सत्यसनातन वैदिक धर्म का वाक्य सत्यमेव जयते न लिखा जाता। अपितु उसके स्थान पर कुरान, बाईबिल अथवा यहुदी आदि किसी अन्य मजहब का वाक्य लिखा जाता। क्या सर्वप्रथम एवं सर्वोपरि धर्म के वाक्य का उपदेश करने वाला संविधान भी कभी धर्मनिरपेक्ष हो सकता है ? अत्यन्त दुःख और आश्चर्य का विषय है कि इस बात को न जानकर तथा धारा २५ को न समझकर ही देशके स्वार्थी तथा मत लोभी नेताओं एवं राष्ट्रद्रोही मतान्ध जनों ने विश्व भर के लोगोंको आश्रय देने वाली भारतभूमि को आतंक तथा पाखण्ड के मुंह में धकेल दिया है।

अब हम संविधान की धारा २५ पर विचार करते हैं, जिसको कि न समझकर संपूर्ण विश्व पर शासन करने वाला भारत इस्लामिक आतंकवाद का गुलाम बनता जा रहा है। धारा २५-१ के अन्तर्गत जो व्यक्तिगत मत-मजहब के पालने की स्वतन्त्र छूट अथवा अधिकार दिया गया है वह एक सर्वथा यथा-इच्छा खुली छूट (मनमानी) नहीं है। अर्थात् भारत के संविधान द्वारा धारा २५-१ के अन्तर्गत दी गयी छूट मर्यादित सीमा से बंधी हुई है। १९५२ में मुम्बई हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश श्री मु. करीम छागला और न्यायमूर्ति श्री राजेन्द्र गडकर ने इसी धारा २५ के मौलिक अधिकार पर निर्णय देते हुए एक फैसला सुनाया था कि मत-मजहब को पालने का स्वतन्त्र अधिकार सीमा रहित न होकर नैतिकता से प्रतिबंधित है। अर्थात् भारत का संविधान किसी भी अनैतिक राष्ट्र विरोधी, मानवता विरोधी, पशुबलि, राष्ट्रद्रोह, गौ आदि प्राणियों की हत्या, काफिर के नाम पर देश के मौलिक जनों अर्थात् आर्य हिन्दुओं के कत्लेआम का प्रेरक व विश्व भर के मानवों को जन्म देने वाली आर्यनारियों के प्रति गुण्डागर्दी

को प्रेरणा देने वाले कुरान आदि मत-मजहब के व्यवहार को छूट नहीं देता।

देश की आम जनता के लिए घातक एवं अनैतिक ईस्लामिक आतंकवाद के जोहाद-पूर्ण वातावरण में यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि भारत का संविधान धारा २५ के अन्तर्गत इस देश में रहने वाले नागरिक को आखिर किस प्रकार के मजहब की स्वतन्त्रता देता है ? जैसे कि हम ऊपर लिख चुके हैं कि हमारे संविधान में ऐसे किसी भी प्रकार के मजहब को छूट नहीं दी गयी है जो कि अनैतिक है। जैसे कि बहुपत्नी विवाह-क्योंकि जैसे कि एक मुसलमान पति यह नहीं चाहता कि उसकी पत्नी किसी और पुरुष को चाहे, तो फिर नैतिकता की दृष्टि से कोई मुसलमान महिला भी ये नहीं चाहती कि उसका पति किसी दूसरी महिला पत्नी को चाहे। दूसरी बात संविधान की धारा २५-३ में यह कहा गया है कि मजहब पर्यावरण व स्वास्थ्य को बिगाड़ने वाला न हो। अर्थात् जिस मजहब की शिक्षाओं से मानव-मानव का शत्रु बनता है और जैसे कि कुरान की अनेकों आयातों की शिक्षा के अनुसार गैर मुसलमानों अर्थात् आर्य हिन्दुओं का खून करने, उन्हें दोस्त न बनाने, उनके घरों व धनों को लूटने की शिक्षा देता है। इतना ही नहीं अपितु कुरान ८-४-१ और २४-३३-५० के अनुसार गैर मुसलमानों की स्त्रियों को मुसलमानों के यौनाचार की सामग्री बताता है। गैर मुसलमानों को उन्हें आग में झोंकने की बात करता है। अतः ऐसे मानवता के विरोधी अनैतिक एवं असामाजिक मजहब को संविधान की कदापि छूट नहीं है।

भारत सरकार दिल्ली कोर्ट के सुयोग्य जज श्री जेड. एस. लोहाट ने (एफआईआर. २३७-८३, वी-५९६ पुलिस स्टेशन हाउजकाजी) कुरान की आयतों पर निर्णय देते हुए कहा था कि इन्हीं आयतों के कारण मुसलमानों और हिन्दुओं के बीच झगड़े व खून होते हैं। संविधान की धारा २५ के अन्तर्गत यह स्पष्ट कहा गया है कि जिस मजहब के आचरण से संवैधानिक व्यवस्ता बिगड़ती है। ऐसे अनैतिक मत-मजहब को छूट नहीं है। अर्थात जहां भारत एक ओर जनसंख्या के कारण बेरोजगारी व भुखमरी से पीड़ित व चिन्तित हैं वहां यह मुस्लिम लोग वोट को बढ़ाकर इस्लामिक राज्य स्थापित करने की गंदी भावना से अधिक से अधिक बच्चे पैदा करके यहां की सार्वजनिक व्यवस्था को और अधिक बिगाड़ रहे हैं। इतना ही नहीं अपितु मरने के पश्चात् भी अपनी लाशों को सार्वजनिक हित में (मुहम्मद करीम छागला की तरह) चलाने की अपेक्षा भारत भूमि में दबाकर उसे और अधिक बंजर बना रहे हैं।

इस देश के तथाकथित वोट व धनलोभी नेता तथा जनता को यह बात गंभीरतापूर्वक विचारनी चाहिए कि भारत का संविधान जो कि यहां के नागरिकों को वैज्ञानिक व तार्किक विचार रखने, परस्पर प्रेम व सौहार्द्र का व्यवहार करने तथा भारत की प्राचीन संस्कृति, गो तथा मातृभूमि के प्रदि आदर का भाव रखने की शिक्षा देता है, आखिर वह इससे विपरीत कैसे किसी आतंकवादी अथवा पाखण्डी मजहब को चलने की छूट दे सकता है ?

अतः इस संवैधानिक चर्चा से यही सिद्ध होता है कि धारा २५ किसी भी नागरिक, समाज या मजहब को जो कि अन्य विचार वालों को कत्ल करने, राष्ट्र की आर्थिक आधारशिला गो आदि पशुओं को काटने, नारियों का बहुपत्नी विवाह से बलात्कार द्वारा अपमान करने, पृथ्वी को चपटा बताकर अज्ञान फैलाने, अधिक बच्चे पैदा करके सार्वजनिक व्यवस्था बिगाड़ने व आतंकवादियों को अपने घर पर छिपाने वाले राष्ट्रद्रोही मजहब को छूट नहीं देता। यदि बच्चे देशभक्त बुद्धिजीवी जन कुरान की कत्लेआम करवाने वाली शिक्षाओं पर विश्वास करने वाले मुसलमानों को नागरिकता व गत देने का अधिकार समाप्त करवा दें तो भारत में वोटों के भूखे नेता तथा आतंकवादी स्वयं ही समाप्त हो जाएं और इसके साथ-साथ बेरोजगारी तथा भुखमरी की समस्या भी सदा के लिए हल हो जाए। राष्ट्रवादी वकीलों व देशभक्त लोगों को चाहिए कि इस धारा २५ के भ्रान्तिनिवारण हेतु नेताओं को समझायें व पत्र-पत्रिकाओं में लेख छापें।

मुसलमान मजहब के पर्शनल ला शरियत के अन्तर्गत हुदूसे इस्लाम एक ऐसा अनिवार्य कानून है कि जिसकी अवहेलना करने पर कोई भी व्यक्ति मुसलमान नहीं माना जाता। इस कानून में विभिन्न अपराधों की सजाओं का वर्णन है। जैसे कि चोरी करने पर सार्वजनिक रुप से हाथ-पैर को काट

देना, शराब पीने पर सार्वजनिक रुप से ६० कोड़े लगाना, किसी भी चरित्रवान स्त्री पर गलत आरोप लगाने पर सार्वजनिक रुप से ८० कोड़े की सजा देना, किसी पुरुष या स्त्री के साथ बलात्कार करने पर सार्वजनिक रुप से पत्थर मार-मार कर जिन्दा ही मौत की सजा देना लिखा है। भारत सरकार को चाहिये की यहां रहकर मुसलमान होने के नाते किसी भी प्रकार की सुविधा प्राप्त करने के लिए शीघ्र ही उपरोक्त सारी सजाएं देना अनिवार्य कर दे, जिससे कि एक तो वे सच्चे मुसलमान सिद्ध हो सकें और दूसरे उनके मजहब की भारत में रक्षा भी हो सके। जो मुसलमान यह सब सजायें न लेना चाहें उन्हें गैर मुसलमान समझकर सारी सुविधायें छीन ली जाएं और कुरान के अनुसार काफिर सिद्ध होने से क्यों न उनको सार्वजनिक रुप से कत्ल करवा दिया जाए। भारत के सुयोग्य राष्ट्रपति महोदय भी अपनी वैज्ञानिक बुद्धि से उत्तर देने का कष्ट करें।

आतंकी मुस्लिम जिहादियों का नया नारा : भारत में हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान का नारा लगाने वाले लोग देशद्रोही है (आजमखान सांसद सपा) भारत देश मुस्लिम आदि लोगों का है। न कि आर्यों का, क्योंकि आर्य लोग बाहर से आए हैं। यहां रहने वाले मूल निवासी ही मुसलमान आदि बने थे। अतः यह देश उनका है। प्रमाण हेतु देखे समाचार पत्र मुस्लिम इण्डिया २७ मार्च १९८५।

इस मान्यता को तथा इस देश पर सैकड़ों वर्ष मुगलों ने राज्य किया है। बात को ध्यान रखकर मुसलमान 'पाकिस्तान' के पश्चात् सेकुलर कृमियों के आशीर्वाद से अपनी जनसंक्या बढ़ाकर अब कश्मीर को भी पृतक 'मुस्लिम राज्य' बनाने का आंदोलन चला रहे हैं। कुछ कठोर कारवाई करने की अपेक्षा कुर्सी लोभी भारत सरकार नेता 'मुस्लिम वोट बैंक' के प्रलोभन में देश को कहीं पुनः न बटवा दें।

पता – उद्गीय साधना स्थली, हिमाचल प्रदेश

अनमोल विचार : करें स्वीकार

– भुवनेश्वर आर्य

१. जग रुठे पर रब न रुठे।
२. सुनो सबकी करो मन की।
३. दुनियां को नहीं खुद को बदलो।
४. उम्र के साथ ज्ञान बढ़ता है।
५. मेहनत के साथ तकदीर जरुरी।
६. धन के साथ ज्ञान जरुरी।
७. सबको बोलने का अधिकार है।
८. विपक्ष जागरुक होना चाहिए।
९. घर की शांति में ही स्वर्ग है।
१०. किसी का भला करो बुरा नहीं।
११. मीठे झूठ से कड़वा सच अच्छा।
१२. कम बोलो मीठा बोलो।
१३. कर्मों का फल आज नहीं तो कल।
१४. आप सही तो जग सही।
१५. अति का अंत अवश्य होता है।
१६. वक्त किसी के लिये नहीं रुकता।
१७. परिवर्तन ही संसार का नियम है।
१८. कमाओ ऐसी चीज जो साथ जाए।
१९. आत्म ज्ञान सर्वश्रेष्ठ ज्ञान।
२०. आवश्यकता से अधिक सब बेकार है।
२१. ज्ञानी वही जिसमें त्याग हो।
२२. विपरीत परिस्थिति में भी धैर्य रखें।
२३. हम सफर के साथ विचार मिलना जरुरी है।
२४. जीभ और मन पे कन्ट्रोल जीवन अनमोल।
२५. जीने के लिये खाओ खाने के लिये मत जीयो।
२६. तनाव मुक्त जीवन जियो।
२७. चिल्लाने से सच्चाई नहीं दबती।
२८. दुःख में काम आये वही सच्चा साथी।
२९. आशावादी बनो निराशावादी नहीं।
३०. आलोचक बनो निदंक नहीं।
३१. नीचे देखकर जीने वाला सुखी।
३२. समय रहते संभल जाओ।
३३. ईश्वर की मर्जी बिना सब फर्जी।
३४. सबसे बड़ा धर्म जिम्मेदारी।

सामयिक

सदाचार बनाम समलैंगिकता

–डॉ. विवेक आर्य (शिशु रोग विशेषज्ञ, दिल्ली)

सम्पादकीय टिप्पणी : विद्वान् लेखक ने सप्रमाण सिद्ध किया है कि किसी भी प्रकार के समलैंगिकता का समर्थन अपने पाँव में कुल्हाड़ी मारने जैसा है वह भी भारत जैसे देश में जहाँ की परम्परा रही है - स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्याँ सर्वमानवा: । अर्थात् दुनियां के लोगों आचरण की शिक्षा भारत से लो ।

सुप्रीम कोर्ट द्वारा समलैगिकता को धारा ३७७ के अंतर्गत अपराध करार दिया गया है । अपने आपको सामाजिक कार्यकर्ता कहने वाले, आधुनिकता का दामन थामने वाले एक विशेष बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को हताशपूर्ण बताया जा रहा है । उनका कहना है कि अंग्रेजों द्वारा १८६१ में बनाया गया कानून आज अप्रासंगिक हैं । कोई इस फैसले को इतिहास का काला दिन बता रहा है, कोई इसे सामाजिक अधिकारों में भेदभाव और मौलिक अधिकारों का हनन बता रहा है, कोई इसे पाषाण काल की बात कह रहा है । समलैगिंकता का समर्थन करने वालों का पक्ष का कहना है कि इससे एचआईवी की रोकथाम करने में रुकावट होगी क्योंकि समलैगिंक समाज के लोक रोक लगने पर खुलकर सामने नहीं आयेंगे और दूसरे सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को पुलिस इस समाज में एचआईवी प्रचार करने से रोकती है ।

सबसे अचरज की बात यह है कि वही समुदाय कोर्ट के फैसले का सबसे अधिक विरोध कर रहा है, जिसने पिछले वर्ष दिसंबर महीने में घटे दामिनी बलात्कार कांड के विरुद्ध कड़े से कड़े कदम उठाने की मांग की थी । गौरतलब है कि तब सारा ठींकरा पुलिस की नाकामयाबी पर थोप दिया गया था । इस फैसले का अधिकार धार्मिक संगठनों ने स्वागत किया है । उनका कहना है कि यह करोड़ों भारतीयों का जो नैतिकता में विश्वास रखते हैं, उनकी भावनाओं का आदर है । आइए समलैंगिकता को प्रोत्साहन देना क्यूं गलत है इस विषय पर तार्किक विवेचना करें ।

हमें इस तथ्य पर विचार करने की आवश्यकता है कि अप्राकृतिक स्वछंद सम्बन्ध समाज के लिए क्यूँ अहितकारक हैं । अपने आपको आधुनिक बनाने की होड़ में स्वछंद सम्बन्ध की पैरवी भी आधुनिकता का परिचायक बन गया है । सत्य यह है कि इसका समर्थन करने वाले इसके दूरगामी परिणामों की अनदेखी कर देते हैं । प्रकृति ने मानव को केवल और केवल स्त्री-पुरुष के मध्य सम्बन्ध बनाने के लिए बनाया है । इससे अलग किसी भी प्रकार का सम्बन्ध अप्राकृतिक एवं निरर्थक हैं, चाहे वह पुरुष-पुरुष के मध्य हो, स्त्री स्त्री के मध्य हो वह विकृत मानसिकता को जन्म देता है । उस विकृत मानसिकता की कोई सीमा नहीं है । उसके परिणाम आगे चलकर बलात्कार (Rape), सरेआम नग्न होना (Exhibitionsm), पशु सम्भोग (Bestiality), छोटे बच्चों और बच्चियों से दुष्कर्म (Pedophilia), हत्या कर लाश से दुष्कर्म (Necrophilia), मारपीट करने के बाद दुष्कर्म (Sadomasochism), मनुष्य के शौच से प्रेम (Coprohilia) और न जाने किस किस रुप में निकलता हैं। अप्राकृतिक सम्बन्ध से संतान न उत्पन्न हो सकना क्या दर्शाता है ? सत्य यह है कि प्रकृति ने पुरुष और नारी के मध्य सम्बन्ध का नियम केवल और केवल संतान की उत्पत्ति के लिये बनाया था । आज मनुष्य ने अपने आपको उन नियमों से ऊपर समझने लगा है और जिसे वह स्वछंदता समझ रहा है । वह दरअसल अज्ञानता है । भोगवाद मनुष्य के मस्तिष्क पर ताला लगाने के समान है । भोगी व्यक्ति कभी भी सदाचारी नहीं हो सकता, वह तो केवल और केवल स्वार्थी होता है । इसीलिए कहा गया है कि मनुष्य को सामाजिक हितकारक नियम पालन करने के लिए बाध्य होना चाहिए । जैसे आप अगर सड़क पर गाड़ी चलाते हैं तब आप उसे अपनी इच्छा से नहीं अपितु ट्रैफिक के नियमों को ध्यान में रखकर चलाता है । वहां पर क्यूँ स्वछंदता के मौलिक अधिकार का प्रयोग

नहीं करता ? अगर करेगा तो दुर्घटना हो जायेगी। जब सड़क पर चलने में स्वेच्छा की स्वतंत्रता नहीं है, तब स्त्री पुरुष के मध्य संतान उत्पत्ति करने के लिए विाह व्यवस्था जैसी उच्च सोच को नकारने में कैसी बुद्धिमता है।

कुछ लोगों द्वारा समलैंगिकता के समर्थन में खजुराहो की नग्न मूर्तियां अथवा वात्स्यायन का कामसूत्र को भारतीय संस्कृति और परम्परा का नाम दिया जा रहा है जबकि सत्य यह है कि भारतीय संस्कृति का मूल सन्देश वेदों में वर्णित संयम विज्ञान पर आधारित शुद्ध आस्तिक विचारधारा है।

भौतिकवाद अर्थ और काम पर ज्यादा बल देता है जबकि अध्यात्म धर्म और मुक्ति पर ज्यादा बल देता है। वैदिक जीवन में दोनों का समन्वय हैं। एक ओर वेदों में पवित्र धनार्जन करने का उपदेश हैं दूसरी ओर उसे श्रेष्ठ कार्यों में दाने देने का उपदेश है। एक ओर वेद में भोग केवल और केवल संतान उत्पत्ति के लिए हैं दूसरी तरफ संयम से जीवन को पवित्र बनाये रखने की कामना है। एक ओर वेद में बुद्धि की शांति के लिए धर्म की और दूसरी ओर आत्मा की शांति के लिए मोक्ष (मुक्ति) की कामना है। धर्म का मूल सदाचार है। अतः कहां गया है **आचार परमो धर्मः** अर्थात् सदाचार परम धर्म है। **आचारहीन न पुनन्ति वेदाः** अर्थात् दुराचारी व्यक्ति को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते। अतः वेदों में सदाचार, पाप से बचने, चरित्र निर्माण, ब्रह्मचर्य आदि पर बहुत बल दिया गया है जिसे -

यजुर्वेद ४/२८ - हे ज्ञान स्वरुप प्रभु मुझे दुश्चरित्र या पाप के आचरण से सर्वथा दूर करो तथा मुझे पूर्ण सदाचार में स्थिर करो।

ऋग्वेद ८/४८/५-६ - वे मुझे चरित्र से भ्रष्ट न होने दें।

यजुर्वेद ३/४५- ग्राम, वन, सभा और वैयक्तिक इन्द्रिय व्यवहार में हमने जो पाप किया है उसको हम अपने से अब सर्वथा दूर कर देते हैं।

यजुर्वेद २०/१५-१६ - दिन, रात्रि, जागृत और स्वपन में हमारे अपराध और दुष्ट व्यसन से हमारे अध्यापक, आप्त विद्वान्, धार्मिक उपदेशक और परमात्मा हमें बचाएं।

ऋग्वेद १०/५/६- ऋषियों ने सात मर्यादाएं बनाई है, उनमें से जो एक को भी प्राप्त होता है वह पापी है, चोरी, व्यभिचार, श्रेष्ठ जनों की हत्या, भ्रूण हत्या, सुरापान, दुष्ट कर्म को बार बार करना और पाप करने के बाद छिपाने के लिए झूठ बोलना।

अथर्ववेद ६/४१/१ - हे मेरे मन के पाप ! मुझसे बुरी बातें क्यों करते हो ? दूर हटो, मैं तुझे नहीं चाहता।

अथर्ववेद ११/५/१० - ब्रह्मचर्य और तप से राजा राष्ट्र की विशेष रक्षा कर सकता है।

अथर्ववेद - ११/५/१९ - देवताओं (श्रेष्ठ पुरुषों) ने ब्रह्मचर्य और तप से मृत्यु (दुःख) का नष्ट कर दिया है।

ऋग्वेद ७/२१/५- दुराचारी व्यक्ति कभी भी प्रभु को प्राप्त नहीं कर सकता।

इस प्रकार अनेक वेद मन्त्रों में संयम और सदाचार का उपदेश है। खजुराहो आदि की व्यभिचार को प्रदर्शित करने वाली मूर्तियां, वात्सायन आदि के अश्लील ग्रन्थ एक समय में भारत वर्ष में प्रचलित हुए वाम मार्ग का परिणाम है, जिसके अनुसार मांसाहार, मदिरा और व्यभिचार से ईश्वर प्राप्ति है। कालान्तर में वेदों का फिरसे प्रचार होने से यह मत समाप्त हो गया पर अभी भी भोगवाद के रुप में हमारे सामने आता रहता है।

मनु स्मृति में समलैंगिकता के लिए दंड एवं प्रायश्चित का विधान होना स्पष्ट रुप से यही दिखाता है कि हमारे प्राचीन समाज में समलैंगिकता किसी भी रुप में मान्य नहीं थी। कुछ कुतर्की यह भी कह रहे हैं कि मनु स्मृति में अत्यंत थोड़ा सा दंड है उनके लिए मेरी सलाह है कि उसी मनुस्मृति में ब्रह्मचर्य व्रत का नाश करने वाले के लिए मनु स्मृति में दंड का क्या विधान है, जरा देख लें।

इसके अतिरिक्त बाइबिल, कुरान दोनों में इस संबंध को अनैतिक, अवांछनीय, अवमूल्यन का प्रतीक बताया गया है। जो लोग कुतर्क देते हैं कि समलैंगिकता पर रोक से AIDS की रोकथाम होती है, उनके लिए विशेष रुप से यह कहना चाहूंगा कि समाज में जितना सदाचार बढ़ेगा उतना समाज में अनैतिक सम्बन्धों पर रोकथाम होगी। आप लोगों का तर्क कुछ ऐसा है कि आग लगने पर पानी की व्यवस्था करने में रोक लगने के कारण दिक्कत होगी, हम कह रहे हैं कि आग को लगने ही क्यूं देते हो ? भोग रुपी आग लगेगी तो नुकसान तो होगा ही होगा। कहीं पर बलात्कार होंगे, कहीं पर पशुओं के समान व्यभिचार होगा, कहीं पर बच्चों को भी नहीं बक्शा जायेगा।

एक कुतर्क यह भी दिया जा रहा है कि समलैंगिक समुदाय अल्पसंख्यक है, उनकी भावनाओं का सम्मान करते हुए उन्हें अपनी बात रखने का मौका मिलना चाहिए। मेरा इस कुतर्क को देने वाले सज्जनसे प्रश्न है कि भारत भूमि में तो अब अखंड ब्रह्मचारी भी अल्प संख्यक हो चले हैं। उनकी भावनाओं का सम्मान रखने के लिए मीडिया द्वारा जो अश्लीलता फैलाई जा रही है उन पर लगाम लगाना भी तो अल्पसंख्यक के हितों की रक्षा के समान है।

एक अन्य कुतर्की ने कहा कि पशुओं में भी समलैंगिकता देखने को मिलती है। मेरा उस बंधु से एक ही प्रश्न है कि अनेक पशु बिना हाथों के केवल जिव्हा से खाते हैं, आप उनका अनुशरण क्यों नहीं करते ? अनेक पशु केवल धरती पर रेंग कर चलते हैं, आप उनका अनुशरण क्यों नहीं करते ? चकवा चकवी नामक पक्षी अपने साथी की मृत्य होने पर प्राण त्याग देता है, आप उसका अनुशरण क्यों नहीं करते ? ऐसे अनेक कुतर्क हमारे समक्ष आ रहे हैं जो केवल भ्रामक सोच का परिमाम है। जो लोग भारतीय संस्कृति और प्राचीन परम्पराओं को दकियानूसी और पुराने जमाने की बात कहते हैं वे वैदिक विवाह व्यवस्था के आदर्शों और मूलभूत सिद्धांतों से अनभिज्ञ हैं। चारों वेदों में वर-वधु को महान वचनों द्वारा व्यभिचार से परे पवित्र सम्पन्ध स्तापित करने का आदेश है। ऋग्वेद के मंत्र के स्वामी दयानन्द कृत भाष्य में वर-वधु से कहता है, हे स्त्री ! मैं सौभाग्य अर्थात् गृहाश्रम में सुख के लिए तेरा हस्त ग्रहण करता हूँ और इस बात की प्रतिज्ञा करता हूं कि जो काम तुझको अप्रिय होगा उसको मैं कभी ना करूंगा। ऐसे ही स्त्री भी पुरुष से कहते है कि जो कार्य आपको अप्रिय होगा वो मैं कभी न करूंगी और हम दोनों व्यभिचार आदि दोषरहित होके वृद्ध अवस्था परस्पर आनन्द के व्यवहार करेंगे। परमेश्वर और विद्वानों ने मुझको तेरे लिए और तुझको मेरे लिए दिया है। हम दोनों परस्पर प्रीति करेंगे और उद्योगी होकर घर का काम अच्छी तरह और मिथ्याभाषण से बचकर सदा धर्म में ही वर्तेंगे। सब जगत का उपकार करने के लिए सत्य विद्या का प्रचार करेंगे और धर्म से संतान को उत्पन्न करके उनको सुशिक्षित करेंगे। हम दूसरे स्त्री और दूसरे पुरुष से मन से भी व्यभिचार ना करेंगे।

एक और गृहस्थ आश्रम में इतने उच्च आचार और विचार का पालन करने का मर्यादित उपदेश है, दूसरी ओर पशु के समान स्वछन्द अमर्यादित सोच है। पाठक स्वयं विचार करे कि मनुष्य जाति की उन्नति उत्तम गृहस्थी बनकर समाज को संस्कारवान संतान देने में हैं अथवा पशुओं के समान कभी इधर कभी उधर मुंह मारने में है।

समलैंगिकता एक विकृत सोच है, मनोरोग है, बीमारी है। इसका समाधान इसका विधिवत उपचार है ना कि इसे प्रोत्साहन देकर सामाजिक व्यवस्था को भंग करना है। इसका समर्थन करने वाले स्वयं अंधेरे में हैं और औरों को भला क्या प्रकाश दिखायेंगे। कभी समलैंगिकता का समर्थन करने वालों ने भला यह सोचा है कि अगर सभी समलैगिकता बन जायेंगे तो अगली पीढ़ी कहां से आयेगी ?

भजन

हमें रोशनी की झलक इक दिखा दो।
कि दूर जिन्दगी से अंधेरे हो जायें॥

विपदा में बीती यहां हर घड़ी है
जन्मों की मन पर मैल चढ़ी है
हमें साधना का सावन दो धारे
हम साफ सुथरे सबेरे हो जायें।
हमें रोशनी ....

हम परमार्थ पथ से भटक गये हैं
हम स्वार्थ की झाड़ी से अटक गये है
हमें ज्ञान ज्योति दे दो प्रभो जी
भाव सागर से हम किनारे हो जायें
हमें रोशनी ....

भूल भुलियों में हम खो ना जायें
चरणों से तेरे दूर हो ना जायें
दृष्टि दया की सदा हम पे रखना
तुम्हारे लिये हैं तुम्हारे हो जायें॥
हमें रोशनी ....

रचयिता : मोहनलाल चड्ढा, हुडको भिलाई

चिन्तनात्मक

यह कैसा नयावर्ष है ?

- डॉ. दिव्येश्वर शास्त्री, छ.ग. आर्यवीर दल बौद्धिकाध्यक्ष

प्रबुद्धजनों,

हम लोग जिस देश में रहते हैं। वह भारत देश महान् है। यहां की शिक्षा सभ्यता और संस्कृति बहुत ही महान् है। यह आर्यावर्त देश दुनियां के लिए अतिशय अनुकरणीय रहा है। यहां के अनेक सर्वमान्य सिद्धान्त है। इस पावन भारत देश में पर्वों का तांता बंधा रहता है। प्रत्येक वर्ष प्रत्येक माह यहां पर पर्व मनाए जाते हैं। हर एक पर्व हमें आनन्द से परिपूरित कर देता है। क्योंकि पर्व का अर्थ है **पूरयति जनान् आनन्देन इति पर्व**।

विचारशील सज्जनों ! १ जनवरी को हमारे देश में नया पर्व मनाया जाता है, जिसे अंग्रेजी में New Year's Day नया साल कहा जाता है। इस नये वर्ष को भारत में जगह-जगह मनाया जाता है। नये वर्ष के उपलक्ष्य में लाखों बकरे-बकरियां बलि भेंट चढ़ जाते हैं। हजारों लोगों की मति मद्य में लुप्त हो जाती है। अनेक स्थलों पर बलात्कार, भ्रष्टाचार और अत्याचार होते हैं, परम पुनीत कहे जाने वाले देवी देवताओं के मंदिर तीर्थ स्थल मद्य,मांस एवं अण्डों से अपवित्र हो जाते हैं। लाखों बकरें बकरियां एवं मुर्गा-मुर्गियों की मूक आत्मा चीत्कार कर उठती है। प्रतिदिन शान्त रहकर सुखनिद्रा देने वाली रात्रि १ जनवरी को खड़ी-खड़ी जुआरियों को देखती रहती है और उनके दुख से निकलते हुए कर्कश लड़खड़ाती वाणी को सुनती रहती है। श्रद्धा के केन्द्रबिन्दु भारतवासी अन्धश्रद्धा में लीन होकर नूतन वर्ष की मादकता की दुर्गंध लेकर अपना खून पसीना बहाकर अहर्निश कठिन कार्य करके संचय किए हुए धन को लोग चन्द समय में फूंक देते हैं। लोग कहते हैं कि नये वर्ष के प्रथम दिन कोई भी गलत कार्य नहीं करना चाहिए, कोई किसी को न मारे, क्योंकि नूतन वर्ष के प्रथम दिवस पर किया हुआ कार्य पूरे वर्ष भर कर रहता है। पुनरपि मनुष्य जानते हुए भी अनेक हिंसा करता है। देखिए हमारा सिद्धान्त क्या कहता है :-

अहिंसा परमो धर्मः अर्थात अहिंसा परम धर्म है। यह ऋषि मुनियों का अकाट्य सिद्धांत है। जब तक सिद्धान्त का मनसा वाचा कर्मणा परिपालन नहीं किया जाता तब तक इस संसार का कोई भी व्यक्ति सुख शान्ति की प्राप्ति नहीं कर सकता है, सद्विचार, सच्चरित्र, सदाचार को लेकर आया हुआ नया वर्ष दुर्विचार, दुश्चरित्र, दानवता और अनाचार को साथ जाता है। हमारे भोले भाले भारतवासी अतिशय मिथ्यापान के शिकार हो जाते हैं। जो कि इस ईशा मसीह के द्वारा चलाए हुए नये वर्ष को हिन्दुओं का हर बालक अपना मानता है। गलत विचार का शीघ्र प्रचार होता है। जबकि हमारा सिद्धांत है -

असतो मा सद् गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मा अमृतं गमय।

अर्थात् हे प्रभो ! मुझे असत्य से सत्य, अन्धकार से प्रकाश और मृत्यु से अमृत की ओर ले चलो। लोग सद् प्रार्थना तो अवश्य करते हैं पर प्रार्थनानुसार सत्कार्य नहीं करते हैं। सब जानते हैं कि धार्मिक कार्यों में बलि प्रथा निषेध है तथा किसी भी सत्य शास्त्रों में बलिप्रथा का विधान नहीं है। सर्वप्राचीन ग्रन्थ वेद में भी पशु बलि का विरोध किया गया है। यथा **यदि नो गां हिंसी यद्यश्वं यदिपुरुषम्।**
तं त्वा सीसेन विध्यामो यर्थोनो सो अवीर हा।।

अथर्ववेदीय मंत्र में प्रत्यक्ष रूप में प्राणीहिंसा का खंडन किया गया कि दुनियां के लोगों सावधान ! यदि कोई व्यक्ति हमारे भाई-बंधु, पुत्र, कलत्र तथा गाय, घोड़ा, बकरी, भेंड़ आदि को मारता है तो उसे सीसे की गोली से बींध डालो अर्थात् मार डालों जिससे कि विनाश लीला न करे। आदि सम्राट मनु भी कहते हैं-

यस्तु प्राणिवधंकृत्वा देवान् पितृंश्च तृप्यति।
सोऽविद्वांश्चन्दनं दग्ध्वा कुर्यादङ्गारलेपनम्।।

अर्थात् जो व्यक्ति प्राणियों की हत्या कर उसके मांस से देवताओं और पितरों का तर्पण करता है, वह ऐसा ही कर्म करता है, जैसे एक मूर्ख चंदन को जलाकर अंगारों का

लेपन करता है। आज पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति में डूबकर अपनी सभ्यता और संस्कृति को भूल रहे हैं। अतः भारतवासियों उठो और सत्य के ग्रहण करने में उद्यत रहो। नूतन वर्ष का प्रारंभ कब से हुआ उसके बारे में प्राचीन ऋषि महर्षिकृत आर्षग्रन्थों से मालूम पड़ता है, कि सृष्टिका प्रथम मास वैदिक संज्ञानुसार मधु कहलाता है, और वही फिर ज्योतिष में चान्द्रकाल गणनानुसार चैत्रमाह कहलाने लगा। इस कथन के प्रमाण के लिए ज्योतिष के हिमाद्रिग्रन्थ में श्लोक आया है -

चैत्रमासि जगद्ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति॥

अर्थात् चैत्र मास शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा जी ने जगत् की रचना की। पूर्व परम्परानुसार के अनुसार आर्यों के अधिकांश संवत् चैत्र प्रतिपदा से आरंभ किए गए। ब्रह्मदिन, सृष्टि संवत् वैवस्वतादिमन्तराम्भ, सत्, युगादि युगान्तर, कलि संवत् विक्रम संवत् चैत्र प्रतिपदा को ही आरम्भ होता है, पर्व मनाने की प्रथा प्रचलित है। मुसलमानी राज्य में आर्यो सनातन संस्थानों में असत्य व्यस्त होने पर भई नवसंवत्सरोत्सव के समारोह मनाने की परिपाटी बराबर बनी हुई है।

संसार के प्रायः सभी सभ्यजातियों में आनन्दानुभव के साथ-साथ यज्ञादि धर्मानुष्ठान पूर्वक इस नवसंवत्सराम्भ उत्सव को मनाने की प्रथा है। पर आज लोग इस सभ्यता को भूलकर ईसाईयों का अन्धानुकरणकर १ जनवररी को New Year's Day मानकर मनाते हैं। और नाना कष्टों को भोगते हैं। अतः मननशील मनुष्यों को चाहिए कि सत्यासत्य और उचितानुचित का विचार कर जो लोक वेदविरुद्ध न होकर वेदानुकूल हो उसी पर्व को माने मनावें। जिससे सबको सुख शान्ति और आनन्द की प्राप्ति हो।

पता : वैदिक सदनम्, पंचधार सरिया, रायगढ़ (छ.ग.)

देश निर्माण

मेहनत से मिलती है मंजिल-मेहनत करो जवान।
हमें मिलजुल कर करना है - देश का नव निर्माण॥

काँटों के मुख मुड़ जाते हैं - राही के पग छूकर।
कर्मवीर के शब्द कोष में - लिखी नहीं थकान॥

लौ लेकर पुरुषार्थ की बढ़ जा - अंधेड़ों से आगे।
रोक नहीं पायेंगे तेरी - राहें ये तूफान॥

अन्न-धन के भंडार भरे हैं - धरती के कण-कण में।
हरियाली खेतों में लहरे - भरे भरे खलिहान॥

बढ़ते कदमों की निष्कामी - शक्ति और गति को।
खुद ही रास्ता दे देते हैं - सागर और चट्टान॥

तकदीरों की जंजीरें हम - तोड़ेंगे तदवीरों से।
अपनी किस्मत खुद लिखता है - मेहनतकश इन्सान॥

शहीदों को नमन

आक्रमण करने वालों का संहार करके।
अहसां किया तुमने संसार भर पे॥
शहीदों तुम्हें नमन करता वतन।
जमाने ने देखा तुम्हारा बांकपन॥
तेरी जय से गूँजे धरा और गगन।
भारत के सैनिक को शत-शत नमन॥
तुमने जवानी बलिदान कर दी।
अमर प्यारे भारत की पहचान कर दी॥
सुरक्षित रहे हर नगर का आन।
शहीदों तुम्हें नमन करता वतन॥
भारत के सैनिक को शत-शत नमन।
आतंकवादी मारे बिन कफन॥
किया दुष्टों और दुश्मनों का दमन।
भारत के सैनिक तुम्हें शत नमन॥
न्यौछावर किया मातृभूमि पर तन।
तुम्हें नमन करता तुम्हारा वतन॥
शहीदों तुम्हें नमन करता वतन।

- **हरबंशलाल कपूर**, सहमंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली

गत-जन्म की स्मृतियाँ पुनर्जन्म को सिद्ध करती हैं

– महात्मा चैतन्यमुनि

वैचारिक

पुनर्जन्म के सिद्धान्त को न मानने वाले लोगों का कहना है कि यदि पुनर्जन्म होता है तो प्रत्येक जीव को अपने पूर्व-जन्म की स्मृति भी रहनी चाहिए। यह परमात्मा की जीव पर बहुत बड़ी कृपा हैं कि स्मृति नहीं रहती है अन्यथा यदि प्रत्येक व्यक्ति को पिछले जन्म की स्मृति रहती तो इस जन्म के समस्त व्यवहारों में बहुत अधिक कठिनाई आ जाती बल्कि व्यक्ति का जीना ही दुभर हो जाता। किसी-किसी व्यक्ति को स्मृति रहती भी है। एक नहीं ऐसे सैकड़ों ही व्यक्तियों के बारे में देखा, सुना और बढ़ा गया है जिन्हें अपने पूर्वजन्म का ज्ञान हुआ है तथा होता रहता है। पिछले दिनों एक ऐसा हो बालक चर्चा में रहा जिसे अपने पूर्वजन्म कि स्मृति है। आजतक चैनल ने इसकी खबर बहुत विस्तार से दी थी। उसके अनुसार उसका पूर्वजन्म का नाम महावीर था तथा उसी का मित्र रमेश ने उसकी हत्या की थी। यह बालक न्यायालय तक भी गया मगर न्यायालय ने उसकी गवाही को स्वीकार नहीं किया ... विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों में ऐसे व्यक्तियों की बहुतायत में चर्चा है। उनमें से कुछ की चर्चा हम आगे कर रहे हैं -

१. ग्राम शादीनगर जिला फर्रूखाबाद में पण्डित गंगा विष्णु की सात वर्षीय पुत्री पूवर्जन्म का वृतान्त सुनाती थी।
२. बंगाल में एक हिन्दू बालक कुरान पढ़ता रहा है और अपने पूर्वजन्म का नाम नूरउद्दीन बतलाता रहा।
३. राय बहादुर सुन्दरलाल ने अपने लेख (लीडर, अगस्त १९२३) में सलीमपुर (भरतपुर रियासत) के प्रभु नामक एक ब्राह्मण लड़के के पूर्वजन्म की स्मृति के बारे में विस्तार से लिखा है।
४. पंजाब केसरी के २९ जून में समाचार छपा जिसमें बताया गया था कि कालांवली के चन्दसिंह नामक किसान की आठ साल की लड़की सुखवीर कौर को अपना पूर्वजन्म स्मरण था तथा उसके पूर्वजन्म के गांव जाकर इसकी पुष्टि भी की गई।
५. बरेली के कुंवर कैकयी ननद्र सहाय, वकील के पुत्र तीन वर्षीय जगदीशचन्द्र अपने पूर्वजन्म की बात प्रमाणित की।
६. बरेली के ही विश्वनाथ, बजरंग बहादुर तथा हीरा कुंवर नामक बालकों ने अपने पूर्वजन्म की बात कही जो सही निकली।
७. सुन्दर लाल, हीरपुर जिला सीतापुर, ब्रजचन्द्र शरण मिरजापुर ने भी अपने पूर्वजन्म की बातें बताई जो की सही पाई गई।
८. नवभारत टाईम्स (२५ अगस्त १९७६) के अनुसार गुठना गांव (फर्रूखाबाद) के श्री प्रेमचन्द्र शुक्ल के यहां पैदा हुई गायत्री ने अपने पूर्वजन्म की बात कही और उसकी पुष्टि भी की गई।
९. नवभारत टाईम्स (९ जनवरी १९७७) में कांकरौली के पोस्ट मास्टर श्री सत्यनारायण गौड़ के साढ़े सात वर्षीय बालक राकेश गौड़ ने अपने पूर्वजन्म की प्रामाणिक बातें बताई।
१०. राजस्थान विश्वविद्यालय के डिपार्टमेंट ऑफ पैरासाइकौलौजी के डायरेक्टर एच.एन. बैनर्जी ने गोपाल नाम के एक नौ वर्षीय बालक की चर्चा की है जिसे अपना पिछला जन्म स्मरण था।
११. दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ. नगेन्द्र के पिता श्री राजेन्द्र ने 'पूर्व-जन्म-स्मृति' नाम से एक पुस्तक लिखी थी जिसमें उन्होंने बीसियों पूर्वजन्म की स्मृति होने से संबंधित घटनाओं का उल्लेख किया है। उनमें एक घटना श्री सूरजस्वरुप की भी है, जो अतरौली (अलीगढ़) में विद्युत विभाग में स्टोर-कीपर थे तथा पूर्वजन्म में वे दिल्ली के मोहल्ला दरीबा कलां के सेठ श्री हरिशंकर के पुत्र थे। श्री रामस्वरुप जी को अपने उससे भी पूर्वजन्म की स्मृति थी जिसमें ये एक साधु थे।

१२. पण्डित सन्तराम बी.ए. जी ने सन् १३ जुलाई १९७० को जालन्धर की एक चार वर्षीय कन्या के बारे में लिखा है जिसने अपने पूर्वजन्म के बारे में सब कुछ बताया तथा अपने पूर्वजन्म के गांव नारा (होशियारपुर) में जाकर माँ-बाप ने उस सत्य की पुष्टि की।

१३. पण्डित सुरेन्द्र शर्मा गौर, काव्य-तीर्थ जी ने चीराखाना दिल्ली के श्री बाबू शिवसहाय माथुर की तीसरी कन्या शान्तिदेवी की पूर्वजन्म की स्मृति की घटना लिखी है। उसने पूर्वजन्म की घटनाओं को सुनाकर सबको अंचभित कर दिया। पूर्वजन्म में वह मथुरा के श्री पण्डित चतुर्भुज जी की पुत्री थी।

१४. पण्डित चन्द्रमणि विद्यालंकर जी ने भी एक पूर्वजन्म की घटना की जांच की जो सही पाई गई। उन्होने देहरादून के सेठ रामकिशोर की कन्या जिसकी आयु लगभग तीन वर्ष की थी के बारे में लिखा है जिसने अपने पिछले जन्म की समस्त घटनाएँ कह सुनाई तथा उसकी पुष्टि भी की गई।

१५. २५ अगस्त १९४९ की 'नार्दन इंडिया पत्रिका' में सहारनपुर के परमानन्द के बारे में प्रकाशित हुआ कि उसकी मृत्यु ९ मई १९४३ को हुई और ठीक नौ महीने छः दिनों के बाद जिला बदायूँ के बिसौली कस्बे के पण्डित बांकेलाल शर्मा के यहां प्रमोद के रूप में उसका जन्म हुआ। इस बात की भी पुष्टि की गई।

१६. २ अप्रैल १९६२ के 'आज' में प्रकाशित समाचार के अनुसार बलिया जिले के गांव छपरा की आशा का १९५७ में देहावसान हो गया और उससे फरवरी १९५८ में भरतपुर के बयाना गांव के भगवती प्रसाद अग्रवाल के यहां जन्म लिया जिसका नाम गायत्री रखा गया।

१७. २० जुलाई १९६१ के 'लीडर' में प्रकाशित समाचार के अनुसार मथुरा जिले के छाता नगर के श्री ब्रजलाल के यहाँ प्रकाश नाम का एक बेटा पैदा हुआ जिसने अपने पूर्वजन्म की बात बताई कि पूर्वजन्म में वह कोसीकलां के श्री भोलानाथ जैन का पुत्र था।

१८. १३ जुलाई १९६० के 'आज' में स्वर्णलता नाम की एक कन्या का वृतान्त छपा है जिसके अनुसार स्वर्णलता को अपने दो पूर्वजन्मों की स्मृति थी।

१९. 'अमृत बाजार पत्रिका' के २५ मार्च १९६५ में समाचार प्रकाशित हुआ जिसमें बताया गया है कि दिल्ली के आसफअली मार्ग के एक पेट्रोल पम्प के व्यवस्थापक के यहां गोपाल नाम का पुत्र पैदा हुआ जिसने अपने पूर्वजन्म का सारा वृतान्त सुनाया।

२०. 'आज' के ७ अगस्त १९७० के अंक में गाजियाबाद के एक आयकर अधिकारी के यहां जन्में सुभाष के पूवर्जन्म के स्मृति की घटना छपी है जिसमें सुभाष ने अपने पूर्वजन्म की बातें बताई। सुभाष पिछले जन्म में मुसलमान था।

२१. 'आज' के ही १९ जनवरी १९६१ के अंक में बोधगया से लगभग आठ किलोमीटर दूर हवाई अड्डे के पास के एक गांव के बालक के बारे में समाचार प्रकाशित हुआ जो पूर्वजन्म में श्रीलंका में एक भिक्षु था।

२२. आजकल गुरुकुल कांगड़ी में आकाश नाम का एक लड़का है जिसकी आयु वर्तमान में लगभग १० वर्ष की है। उसका जन्म बिहार के किसी गांव में हुआ और वह अल्पायु में ही इस बात की जिद्द करने लगा कि वह हरिद्वार जाना चाहता है। माँ-बाप के इतना पैसा नहीं था इसलिए वे उसे बनारस ले गए मगर वहां जाकर बालक ने कहा कि यह हरिद्वार नहीं है, मुझे तो हरिद्वार ले चलो, अर्थात् उसे पूर्वजन्म में देखे गए हरिद्वार की स्मृति थी.... इतनी छोटी आयु में भी वह बहुत विद्वान् है तथा गीता स्मरण है ...

२३. गत दिनों हमारा परिचय पठानकोट निवासी श्री जितेन्द्र महाजन जी से हुआ जिन्हें अपने पिछले सात जन्म स्मरण हो आए हैं। हिमाचल प्रधेश के डमटाल नामक स्थान में इनका नमक का व्यवाहार है ....

२४. श्री हीरेन्द्र नाथ दत्त, एम.ए. ने अपनी 'कर्मवाद और जन्मात्तर' पुस्तक में एक सत्य घटना का उल्लेख किया है। घटना एक डाकू द्वारा सेठ को लूटे जाने और उसकी हत्या कर देने के बारे में है। बाद में इसी सेठ ने उस डाकू के घर में जन्म लिया था.....

२५. जून १५, २००७ को आज तक चैनल पर हरियाणा के गांव अम्बाला की परमजीत नामक़ लड़की के पुनर्जन्म की घटना दिखाई गई। उसका नाम इस जन्म में शिवानी

रखा गया था....उसने अपने पूर्वजन्म की समस्त घटनाएँ सत्य-सत्य बता दी।

२६. अगस्त २४,२००४ को डिस्कवरी चैनल पर वैज्ञानिक अनुसंधान कर्ताओं ने भी पुनर्जन्म का होना स्वीकार किया तथा उसी दिन आज तक चैनल पर एक ऐसी महिला को दिखाया गया जिसे अपने तीन जन्म स्मरण हो आए थे।

विदेश में भी पूर्वजन्म के स्मरण या पुनर्जन्म को सिद्ध करने वाली ऐसा घटनाएँ हैं, जिन्हें हम आगे दे रहे हैं -

१. फिल्डींग हाल ने अपनी पुस्तक सोल ऑफ पिपुल में कई ब्रह्मी बालकों के प्रामाणिक वृतान्त लिखे हैं, जिन्हें अपने पूर्वजन्मों की बातें स्पष्ट स्मरण थी।

२. श्रीमती ऐनी बिसेन्ट को अपने कई पूर्वजन्मों की स्मृति थी।

३. डाक्टर पास्कल लिखता है कि वे कई जन्म के अन्धे स्वप्न देखते हैं ....

४. डाक्टर व्हाईट लिखते हैं कि एक स्त्री निद्रा में चलने की अवस्था में अरबी बोलती थी जबकि उसने अथवा उसके कुल वालों ने कभ अरबी न पढ़ी थी।

५. कवि कोलरिज लिखता है कि एक स्त्री सेविका सर्वथा मूर्ख व अशिक्षित थी परन्तु स्वप्न में वह हैबरियू, लातोनी व यूनानी भाषा बोलती थी।

६. बरजीनिया विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ मेडीसिन के साइकिएट्री-विभाग के चेयरमैन डॉ. आएन स्टीवेन्सन ने १९६६ में एक पुस्तक प्रकाशित की है जिसमें पूर्वजन्म के सम्बन्ध में बीस उदाहरण दिए गए हैं। जिनमें से एक उदाहरण इंग्लैण्ड के पोल्लौक-युगल का है। इस परिवार में दो बहने थी जिनकी एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। उनकी मृत्यु के १७ महीने बाद पोल्लौक पति-पत्नी के घर में दो और लड़कियाँ पैदा हई जिनका नाम जैन्नीफर तथा गिल्लियन रखा गया। उन्होने भी अपने पूर्वजन्म की बातों को बहुत ही बारीकी से बताया था...

७. डॉ. स्टीवेन्सन ने 'जनरल ऑफ दि अमेरिकन सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च' के अप्रैल १९६० के अंक पृ. ५६ में एक अमेरिकन युगल का वर्णन किया है जिन्हें मुम्बई में आने पर पूर्व जन्म की एकाएक स्मृति हो आई।

८. एच. हार्वे-डे अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि रायल आइरिश राइफल्ज में एक व्यक्ति था जिसका नाम था ज्यार्ज कारटल। वह अचानक ऐसी भाषा बोलने लगा जिसे कोई समझ नहीं सकता था ... बाद में सेना की टुकड़ी को जब बर्मा भेजा गया तो मालूम हुआ कि वह बर्मी भाषा बोलता था।

९. स्टीवेन्सन ने अपनी पुस्तक में एक आंग्ल महिला का दृष्टान्त दिया है जो अचानक प्राचीनकाल की नौरविजियन-भाषा बोलने लगी ....

१०. ग्रीक-विद्वान् तथा अपने समय के महान् गणितज्ञ पाईथागोरस को अपने एक नहीं बल्कि कई पूर्व-जन्मों की स्मृति थी। एक बार जब उसने एक ग्रीक मन्दिर में ढाल टंगी हुई देखी तो उसने कहा कि ट्राय की लड़ाई में पिछले जन्म में उसने इसी ढाल का उपयोग किया था।

११. सर बालटर स्कौट ने १८२८ में अपनी डायरी में लिखा कि मुझ पर अपने पूर्वजन्म का एक अद्भुत अनुभव छा गया। मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा कि मेरे सामने जो कुछ हो रहा था वह इसी जन्म में पहली बार नहीं हुआ था, मैं जो कुछ सुन रहा था वह इसी जन्म में पहली बार नहीं सुन रहा था। मैंने इन्हीं विषयों पर इन्हीं लोगों के साथ न जाने कब किस पिछले जन्म में भी इसी प्रकार की चर्चा की थी।

१२. अंग्रेजों के प्रसिद्ध लेखक विलियम होम लिखते हैं कि वे लंदन के एक प्रतीक्षालय में प्रविष्ट हुए। वे वहां पहले कभी नहीं आए थे, परन्तु उन्हें ऐसा अनुभव हुआ कि वे इस स्थान की हर बात से परिचित हैं। वे सोचने लगे कि मैं यहां पहले तो कभी आया नहीं, फिर यहां की प्रत्येक वस्तु इतनी जानी-पहचानी क्यों प्रतीत होती है ? इस बात को परखने के लिए यह जानकारी भ्रम ही तो नहीं है उन्होंने अपने से कहा कि अगर मेरी प्रतीति ठीक है तो सामने के ढक्कन में एक गाँठ होनी चाहिए। ढक्कन को खोला तो सचमुच उसमें गाँठ थी।

पता : महादेव, सुन्दरनगर, १७४४०१ हिमाचल प्रदेश

जीवन-दर्शन

अपने परिवार को जहर न दें.

★ श्री ओमप्रकाश बजाज

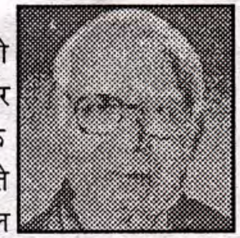

ठहरिए ! कहीं आप अपने परिवार को जहर तो नहीं खिला रहे ? अरे आप तो मेरा मुंह ताकने लगे, हैरान न हों, मैंने नितांत गंभीरता से आप से प्रश्न किया है। आत्मविश्वास और अन्तपरीक्षण करके ही उत्तर दीजिएगा। मुझसे ज्यादा स्वयं आप को इस प्रश्न के उत्तर की आवश्यकता है।

यदि आप नौकरी में है और अपनी सामर्थ्य के अनुसार पूरी लगन, निष्ठा, मेहनत और ईमानदारी के साथ प्रतिदिन का अपना कार्य पूरा नहीं करते हैं . अर्थात् कामचोरी करते हैं। अथवा भ्रष्टाचार से ऊपर की कमाई करते हैं। तो विश्वास कीजिए आप जो कुछ आय के रूप में घर ला रहे हैं वह जहर है-केवल जहर, जो आप अपने परिवार को खिला रहे हैं। यदि आप दुकानदार हैं या कोई धंधा करते हैं और कम तौलते हैं घटिया चीज को बढ़िया बताकर ग्राहक के साथ धोखाधड़ी करते हैं, मिलावट करते हैं अथवा कालाबाजारी या मुनाफाखोरी करते हैं तो यकीन मानिए आप ऐसे कमाई करके अपने परिवार को जहर खिला रहे हैं। यदि आप मिल मालिक हैं अथवा कोई फैक्टरी चलाते हैं और बनावटी सामान बनाते हैं, टैक्स की चोरी करते हैं, दो नम्बर के खाते रखते हैं, मजदूरों का शोषण करते हैं, अपनी तिजोरी भरने के लिए हर गलत काम करते और कराते हैं तो निश्चय जानिए आप अपने प्रियजनों को जहर-केवल जहर ही खिला रहे हैं।

यदि आप शिक्षक हैं और अपने विद्यार्थियों के प्रति अपने नैतिक दायित्व को भूलकर गुटबाजी राजनीति, हड़ताल में समय गंवाते हैं । बजाय क्लासरुम में तन्मयता से पढ़ाने के ट्यूशन के धन्धे को प्रश्रय देते हैं। अपने निजी स्वार्थ के लिए छात्रों के कैरियर और भविष्य के साथ खिलवाड़ करते हैं। तो सही जानिए आप का और आपके परिवार का कल्याण कभी नहीं होगा।

यदि आप चिकित्सक हैं और डॉक्टर बनते समय ली गई शपथ और संकल्प को आपने भुला दिया है। कोठी, कार, शौकात, ऐश-आराम, बैंक-बैंलेस जुटाने की होड़ में तड़पते, कराहते रोगियों और दुखी, मायूस, विवश उनके परिवारजनों के कष्ट से आंख मूंद उनके तन से कपड़े तक भी उतरवा कर आप केवल अपनी जेब भरने में लगे हुए हैं। अपने बंधे हुए हिस्से की खातिर रोगियों के भान्ति-भान्ति के ऊलजलूल अनावश्यक टैस्ट करवाते हैं। दवा कम्पनियों से प्राप्त फ्री सेम्पल भी बेच खाते हैं। दवा कम्पनियों से महंगे महंगे गिफ्ट लेते हैं तथा उनके दबाव में उनकी महंगी दवाएं ही लिखते हैं। आपरेशन टेबल पर मरीज को बीच आपरेशन में छोड़कर उसके घर वालों से अधिक फीस के लिए सौदेबाजी करते हैं। नकली दवाइयाँ बनाने वालों से सांठगांठ रखते हैं। तो निश्चित जानिए आप अपने परिवार को ऐसा धीमा जहर दे रहे हैं जिसका इलाज स्वयं आपके पास भी नहीं है। यदि आप इंजीनियर या ठेकेदार हैं और केवल रातोंरात करोड़पति बनने के लोभ में सीमेंट की जगह रेत का इस्तेमाल कर देश के साथ द्रोह और अपने पेशे के साथ गद्दारी कर रहे हैं तो क्या यह कहने की आवश्यकता है कि आप अपनी पत्नी, प्यारे बच्चों और प्रियजनों को जहर खिला रहे हैं ? सम्भवतः आप की रुचि राजनीति में है, अच्छी बात हैं, परन्तु यदि आप आया राम-गया राम का खेल खेल कर, राजनीतिक सौदेबाजियाँ करके, राजनीति के नाम पर गुण्डागर्दी करके, आत्मा और ईमान को गिरवी रख कर, देशहित और जनकल्याण को अनदेखा करके, वोट-बैंक के लालच में हर उसूल और मर्यादा को तिलांजलि देकर, केवल और केवल जल्दी से जल्दी अपनी सात पीढ़ियों तक का घर बैठ ऐशो-आराम का साधन और समान जुटाने में लगे हुए हैं तो जान लीजिए कि आप अपने ही हाथों अपने ही परिवार का विनाश करने का आयोजन कर रहे हैं।

अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है, जब जागे तभी सबेरा, सुबह का भूला शाम को घर लौट आए तो भूला नहीं कहलाता, पश्चात्ताप सबसे बड़ा प्रायश्चित्त माना गया है । अपनी मानसिकता को बदल डालिए। अपने कामों से अपने परिवार का अहित मत कीजिए, अपनी पत्नी और बच्चों के लिए अपने ही हाथों कांटे मत बोइये।●

पताः बी-२, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर४८२००१ (म.प्र.)

गौ रक्षा को महत्त्व दे भारत सरकार

- डॉ. विजेन्द्रपाल सिंह

उपादेयात्मक

भारत सरकार को गो रक्षा का महत्व समझते हुए इसके लिए कठोर नियम बनाने चाहिए, भारतीय संस्कृति एवं उन्नति का गोवंश अभिन्न अंग है। प्राचीन काल से ही गोसंवर्द्धन को महत्वपूर्ण माना जाता रहा है। राजा, महाराजा, ऋषि व विद्वान तथा सामान्य जन गौ पालते थे व उसकी सेवा करना अपना धर्म समझते थे। गुरुकुल, आश्रम, ऋषि, महर्षियों, राजाओं के यहाँ सहस्रों की संख्या में गौ होती थी। गुरुकुलों के ब्रह्मचारी दूध पिया करते थे और अच्छे अच्छे श्रेष्ठ विद्वान बनते थे श्री कृष्ण, चन्द्रगुप्त, चाणक्य, राजा जनक, महाराजा विक्रमादित्य आदि सभी ने गो वंश को महत्व दिया था उस महत्व की मर्यादा आज भी बनी रहनी चाहिए।

गाय या गोवंश से केवल दूध, घी ही प्राप्त नहीं होता अपितु भारत की सामाजिक, आर्थिक, उन्नति के लिए अत्यन्त अधिक महत्वपूर्ण है जिस प्रकार सरकारें राष्ट्र में उद्योगों को प्रधानता दे रही है उसी प्रकार और उससे अधिक महत्व गो संवर्द्धन को देना आज की आवश्यकता है, क्योंकि उद्योगों के चलते प्रदूषण से मानव व प्रकृति तथा पर्यावरण की स्थिति भयंकर व चिन्ता जनक बनती जा रही है। पर्वतों का कटान, वनों का समाप्त होना, नदियों के जल का दूषित होना व जल स्तर का घटना। कई नदियों का जल पीने योग्य ही नहीं रहा, समुद्र में जाकर इस जल से वहां के जीव जन्तु भी नष्टप्राय होने लगे हैं। इधर वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण से मनुष्यों को हृदय रोग, यकृत्, वृक्क, त्वचा, नेत्र, कर्ण, श्वास आदि के रोगों ने घेर लिया है। दूध व हरे शाक आदि अनाजों में भी रासायनिक उर्वरक कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग से मनुष्य को आजीवन रोगी बना दिया है, आज सामान्यतः उच्च रक्तचाप, मधुमेह, श्वास रोग, मानसिक रोग, रक्ताल्पता एवं कैन्सर जैसे रोग भयावह रूप ले रहे हैं उसका कारण लाभकारी पशु गोवंश की कमी व प्रकृति पर्यावरण का नष्ट होना है।

प्रकृति का नष्ट होना पर्यावरण का बिगड़ना, मनुष्यों में अनेकों रोगों का बढ़ना तथा जीवन कष्टमय होना, सबका कारण दिन-रात बढ़ते औद्योगीकरण व उससे उत्पन्न रासायनिक द्रव्य गैस, धुआं, जलीय पदार्थों का निष्कासन है जो कृषि, भूमि, वायु को दूषित कर रहे हैं। औद्योगिक उन्नति बुरी तो नहीं परन्तु साथ-साथ हमें पर्यावरण पर भी तो ध्यान देना चाहिए जितना प्रदूषण हम दिन-रात करते हैं उससे अधिक उस प्रदूषण को नष्ट करने के उपाय भी होते रहने चाहिए वनों को काटकर कारखाने लगा दिए अब वृक्ष कहां लगेंगे इसलिए हमें चाहिए वृक्षारोपण व गोवंश की वृद्धि को भी औद्योगीकरण की भांति महत्व दें।

मांसाहारी व्यक्ति कहते हैं कि मांस न खाया जाय तो यह पशु पृथ्वी पर बढ़ जायेंगे। वे जो ऐसा कहते हैं, वह या तो मूर्ख है या राष्ट्र व पृथ्वी तथा पर्यावरण के शत्रु, क्योंकि जिनका मांस खाया जाता है। वह जीव जन्तु तो अत्यधिक सीधे अहिंसक होते हैं और उनसे मनुष्यों के जीवन की रक्षा होती है गाय भैंस, भेड़, बकरी आदि से दूध, घी, मठा, ऊन, गोबर व मूत्र से खाद, औषधियाँ तथा अन्य पदार्थ प्राप्त होते हैं जिन पर मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन ही निर्भर है, यदि इनकी संख्या पृथ्वी पर बढ़ती है तो यह लाभ की बात है, गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊँट, हाथी, हिरण, खरगोश, बत्तख, सारस, बगले, चिड़ियाएँ, मुर्गे यह सभी जीव बढ़ने चाहिए इनका हमें संरक्षण करना चाहिए यह किसी को कष्ट नहीं पहुंचाते अपितु हाथी तथा ऊँट तो सवारी तथा भार उठाने, लाने ले जाने का उत्तम साधन है।

गाय की वृद्धि होने से दूध का उत्पादन बढ़ेगा गोबर व मूत्र से खाद बनेगी तथा औषधियाँ भी निरापद तथा लाभकारी होंगी गौवंश की वृद्धि पर ध्यान देना चहिए। गौ का दुग्ध सभी के लिए सम्पूर्ण आहार है इसमें शरीर के पोषण

के लिए सभी उपयुक्त आहार है इसमें शरीर के पोषण के लिए सभी उपयुक्त तत्व होते हैं जो निम्न प्रकार से हैं -

१. जल ८६ प्रतिशत २. प्रोटीन - ४.० प्रतिशत

३. वसा - ४.० प्रतिंशत ४. कार्बोहाइट्रेट - ४.० प्रतिशत

५. खनिज - ६ प्रतिशत ६. ऊर्जा - (कैलोरी - ६५ प्रति.

इसके साथ ही कैल्शियम, सोडियम, मैग्नीशियम, पोटेशियम, क्लोराइड होता है इसमें विटामिन-ए होता है, इसमें ऐसे तत्व स्ट्रैनोशियम तथा सेरिब्रोसाइड्स होते हैं जो बुद्धि, धी, धृति, स्मृति को बढ़ाते तथा विकिरणों से शरीर की रक्षा करते हैं।

गौ-मूत्र, गौ-दुग्ध से भी अधिक हितकारी है गौमूत्र में नाइट्रोजन, सल्फर, फास्फेट, सोडियम, पोटेशियम, मैग्नीज, कार्बोलिक एसिड, आयरन, सिलिकन, एन्जाइम्स तथा स्वर्णक्षार, हार्मोन्स, लेक्टोजन आदि तत्व होते हैं, गौमूत्र में आजकल त्वचा, हृदय, कैंसर, पीलिया, पथरी, वृक्क, नेत्र, गला, उदर, मधुमेह, नपुंसकता, पक्षाघात, मस्तिष्क व कैंसर आदि सभी रोगों की औषधियाँ तैयार की जा रही है जो कि सुरक्षित व दुष्प्रभाव रहित होती है।

इसी प्रकार अन्य जीव व जन्तु भी मानव के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं मांसाहारियों का यह कहना कि धरती पर इन जीवों की वृद्धि हो रही है एक दम मूर्खता व बचकाना विचार है। होता यह है कि जीवों की वृद्धि से मनुष्य व पर्यावरण को लाभ ही लाभ है इनकी तो वृद्धि होनी ही चाहिए। भारत में अब इन पशुओं की अत्यधिक कमी होती जा रही है। दूध घृत के मूल्य अत्यधिक बढ़ गए हैं जैविक खाद अब दूर की बात होती जा रही है। पशुओं से प्राप्त पदार्थों की कमी होती जा रही है, इसलिए भारत में इन पशुओं के मांस खाने बेचने व कट्टी घरों पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगना चाहिए।

आज नगरों में कट्टीघरों (कत्लगाह) की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है जो राष्ट्र की उन्नति, सुरक्षा, समृद्धि में घातक है इनके बन्द होने पर ही राष्ट्र की उन्नति सम्भव है और इन पर प्रतिबन्ध न लगा तो नए रोगों के फैलने की सम्भावना बढ़ जाएगी। इनसे चारों ओर की वायु जल व धरती दूषित हो जाते हैं। पर्यावरण व जनता के स्वास्थ्य की हानि होती है अतः सरकार को इस ओर ध्यान अवश्य देना चाहिए और नियम बनाकर कट्टीधारों पर पूर्ण प्रतिबन्ध अविलम्ब लगा दिया जाना चाहिए।

पता - चन्द्रलोक कालोनी, खुरजा (उ.प्र.)

कल्पना के बाँध पर बसन्त और पतझर

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं, भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजश्रीः ।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे, हा मूलतः कमलिनीं गज उज्जहार ।।

भावार्थ :-जीवन को सचमुच में यदि दुर्घटनाओं की जञ्जीर कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी ? मनुष्य सोचता कुछ है और होता कुछ और ही है ? दैव का विधान बहुत विचित्र है। महाकवि भारवि ने अपने शब्दों में इसका बहुत ही आकर्षक वर्णन किया है देखिए - कोशगत (कमल नाल में बद्ध) सम्पुटान्तर्गत, भँवरा सोचता है - रात चली जाएगी और सबेरा होगा, प्रातःकाल के होते ही सूर्य निकलेगा। सूर्य के निकलते ही कमलिनियाँ खिलेंगी और मैं जी भर देखूँगा। परन्तु उसे क्या पता था कि कल्पनाओं के बाँध भी भला किसी के टिके हैं कभी ? वह तो विचारमग्न ही था-कि एक उन्मत्त हाथी आया और उसने कमलिनी को ही जड़ सहित उखाड़ फेंका। सच में विधि का क्रूर अट्टाहास बड़ा विचित्र है।

- सुभाषित सौरभ

प्रेरणात्मक

करुणामूर्ति दयानन्द

- प्रोफे. मोनिका आर्या

गतांक से आगे

विरोधी से प्रेम :-

महर्षि दयानन्द के चित्त में किसी के लिए कोई द्वेषनहीं था। वे एक ऐसे विरले योगी थे, जो अपने विरोधी से भी प्रेम करते थे। उनका चित्त निर्लेप था। उन्होने वेद के उस उपदेश को धारण कर लिया था, जिसमें कहा गया है कि हे मनुष्य तू जगत को मित्र दृष्टि से देख। महर्षि गंगा के किनारे वेदों के प्रचार कर रहे थे। वेद के उपदेश को सुनाना उनका नित्यकर्म था। पुराणों की पोपलीला, मूर्तिपूजा पर उनके तीखे तेवर देखकर कुछ लोग उनके विरोधी हो गए थे। स्वामी जी अपने वेद प्रचार कार्य में लगे हुए थे। उनका मानना था कि धर्म को तर्क और विज्ञान से विपरीत नहीं होना चाहिए।

स्वामी जी जहां प्रचार करते थे वहीं एक व्यक्ति नित्य प्रति गालियाँ देने आता था। स्वामी जी के निवास स्थान के बाहर खड़ा होकर रोज उसने गाली देने, भला बुरा कहने का नियम बना लिया था। स्वामी जी के भक्त कई बार उनसे उसकी शिकायत करते कई बार यह भी कहते कि इसका कुछ किया जाये स्वामी जी हंसकर टाल देते थे। स्वामी जी के भक्त स्वामी जी के लिए फल-फूल, मिठाई तथा मेवे आदि लेकर आते थे। स्वामी जी अपने सभी भक्तों सत्संगियों में भेट में मिली फल आदि सामग्री को बांट देते थे। एक दिन शाम को कोई भक्त फलों की टोकरी लेकर आया। स्वामी जी उसके पात्र का इंतजार करने लगे। स्वामी जी को अचानक वह विरोधी व्यक्ति सामने दिखाई दिया। स्वामी जी उसे प्रेमपूर्वक बुलाया और उसे वह सामग्री भेंट की। वह व्यक्ति बड़े ही आश्चर्य में पड़ा। कोई व्यक्ति इतना सहज निर्लेप कैसे हो सकता है कि वह विरोधी को भी सम्मान या प्रेम का पात्र समझे। वह उस दिन ऊहा-पोह में रहा। अंत में यह सोचकर उसने अपने दिल को तसल्ली दी कि स्वामी जी से शायद पहचानने में भूल हुई होगी। उन्हें मालूम ही नहीं होगा कि मैं उनका विरोधी हूँ। ऐसा क्रम अगले दो-तीन दिन तक चला। स्वामी जी के भक्त भी स्वामी जी से सहमत नहीं थे कि विरोधी को पुरस्कार दिया जाए। जब उस विरोधी को इस बात का पता चला तो वह रह नहीं पाया। स्वामी जी के चरणों में उसने शीश झुकाया। उसके पश्चाताप के आंसू अविरल निकल पड़े। उन्होंने अपने किये की माफी माँगी। स्वामी जी बोले आपने अपनी समझ के अनुसार अपना काम किया मैने अपनी समझ से अपना काम किया। मैं आप की समझ को देखकर अपना व्यवहार भला क्यों बदलूं मैं किसी से बैर नहीं रखता। किसी की दुष्टता को देखकर अपनी सज्जनता को छोड़ने में बुद्धिमत्ता कहाँ है। स्वामी जी ने अपने सद्व्यवहार और प्रेम से ही उनका हृदय बदल दिया था। शास्त्रों में सही कहा गया है कि अक्रोध से क्रोध को जीतें, असाधु को साधुता से जीतें।

विषदाता के प्रति स्वामी जी का व्यवहार :-

स्वामी जी समाज को अन्धविश्वास से मुक्त करने का अभियान चला रहे थे। अन्धविश्वास के चलते ही समाज में कुछ लोगों की दुकान चलती है यही कारण था कि जहां स्वामी जी के प्रशंसक थे वहीं स्वामी जी के विरोधी भी थे।

स्वामी जी लखनऊ में उपदेश दे रहे थे। स्वामी जी का प्रचार जोरों पर था। वहां स्वामी जी के कुछ विरोधियों ने स्वामी जी को पान में विष दिया। स्वामी जी को हठ योग का भी अभ्यास था। स्वामी जी ने पता लगते ही अपनी यौगिक क्रियाएं की और उल्टी करके विष को शरीर से बाहर कर दिया। वहां के तहसीलदार को इस घटना की जानकारी हुई। तहसीलदार मुसलमान होते हुए भी स्वामी जी के प्रशंसक थे, उन्होंने कार्यवाही की। आरोपियों को गिरफ्तार किया। शाम को स्वामी जी से मिलने पहुंचे। वे मन ही मन बहुत खुश थे कि स्वामी जी प्रसन्न होंगे। उन्होंने स्वामी जी को सारा वृतांत सुनाया स्वामी जी उनकी आशा के विपरीत थे। उनके मन से क्षोभ झलक रहा था। तहसीलदार से उन्होने अप्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा- ये आपने क्या किया ? मैं लोगों के बंधन

छुड़ाने आया हूँ, उन्हें बंधन में डालने नहीं। स्वामी जी ने कभी किसी विरोधी का बुरा नहीं चाहा।

नन्ही जान ने स्वामी जी के रसोइये को लालच दिया। रसोईये ने संखिया मिला दूध पिसा हुआ कांच मिलाकर स्वामी जी को पिला दिया। स्वामी जी को दूध में विष होने की जानकारी हुई। स्वामी जी ने अपने रसोईये जगन्नाथ को बुलाया। उसने सारा वृत्तांत जाना और बोले जगन्नाथ तुम्हारे कृत्य को कोई माफ नहीं करेगा। यहां की प्रजा और राजा सब तुम्हें दंडित करने को आगे आयेंगे। हो सकता है कि तुम्हारे प्राण भी चले जाएं। जगन्नाथ अपने इस कृत्य के लिए स्वयं को कोस रहा था। वह क्या करे क्या नहीं कुछ सूझ नहीं रहा था। स्वामी जी ने उसे धीरज बंधाया और उसकी प्राण रक्षा के उपाय सोचने लगे। स्वामी जी ने अपने हत्यारे जगन्नाथ को न केवल माफ किया अपितु उसे प्राणरक्षा के लिए नेपाल भाग जाने की सलाह भी दी। जगन्नाथ की यात्रा में कोई विघ्न न आये इसलिए उन्होंने उसे अपने पास से स्वर्ण मुद्रा भी दी।

इतिहास में ऐसा उदाहरण मिलना मुश्किल है। कोई अपने प्राणघाती हत्यारे पर भी करुणापूर्ण व्यवहार कैसे कर सकता है। स्वामी जी को राजस्थान में रसोईये ने संखिया मिला दूध पिसा हुआ कांच मिलाकर दिया था। स्वामी जी के आंतों में घाव हो गए थे। पूरा शरीर तप रहा था। दस्त पर दस्त होने लगे थे। स्वामी जी की पीड़ा का वर्णन करना मुश्किल है। साधारण व्यक्ति उस शारीरिक वेदना को देखकर ही कराह उठता था। गुरुदत्त पाश्चात्य दर्शन के अधिकारी विद्वान् थे। वे नास्तिक थे। वे स्वामी जी के सामाजिक परिवर्तन के विचारों का सम्मान करते थे। वे स्वामी जी के दर्शनों के लिए उपस्थित हुए।

उन्होंने स्वामी जी की दशा देखी। स्वामी जी के शरीर का रोम-रोम पीड़ा से भरा हुआ था। सांस लेने में भी तकलीफ हो रही थी। शरीर में घाव होने लगे थे। दर्द का अनुमान लगाना सहज था। असह्य पीड़ा में भी स्वामी जी के मुखमंडल में ईश्वर के प्रति कोई शिकायत नहीं थी। इस पीड़ा को सहन करने की ताकत उन्हें कहां से मिल रही थी, गुरुदत्त को समझ नहीं आ रहा था। गुरुदत्त ने देखा इस पीड़ा में भी स्वामी जी की सन्ध्या और ध्यान- साधना का क्रम यथावत चल रहा है। स्वामी जी जब मृत्यु शैय्या में थे तो उन्होने देखा कि मृत्यु स्वामी जी ने सारे दरवाजे खुलवाये। गायत्री मन्त्र का उच्चारण किया तेरी इच्छा पूर्ण हो कहकर शरीर त्याग दिया।

स्वामी जी की मृत्यु ने गुरुदत्त की नास्तिकता की जड़े हिला दी। वे उसी दिन स्वामी जी और उनकी ईश्वर निष्ठा के कायल हो गए। स्वामी समर्पणानन्द जी ने महर्षि दयानन्द को स्मरण करते हुए एक गीत लिखा है। उस गीत की पंक्तियाँ मुझे याद आ रही है -

नादान लोगों ने भोले लोगों ने उस योगी का भेद न पाया..
एक बूंद ने नास्तिक मुनि का सारा मोह भगाया
नादान लोगों ने भोले लोगों ने उस योगी का भेद न पाया॥

वेश्या और स्वामी जी :-

स्वामी जी ने अनेक शास्त्रार्थ किये। वेदों पर आधारित उनके प्रमाण अकाट्य थे। उन्होने कहा था कि मूर्तिपूजा और मृतक श्राद्ध पर वैदिक प्रमाण अगर प्रस्तुत किया जाता है तो वे अपनी हार स्वीकार कर लेंगे। पूरी, काशी नगरी में मूर्तिपूजा को वेदानुकूल सिद्ध करने वाला कोई प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया जा सका था।

स्वामी जी के मन्तव्यों और वेद ज्ञान के सामने किसी की नहीं चली। पण्डे पुजारियों में स्वामी जी के प्रति बहुत ही आक्रोश था। उन्हें अपनी आजाविका छीन जाने का डर भी सता रहा था। स्वामी जी को बदनाम करने की अनेक साजिश की गई। सब पर विफल होने के बाद उन्होंने कुछ धन लालच देकर एक वेश्या को स्वामी जी के पास भेजा। वह स्त्री स्वामी जी के पास पहुंची। स्वामी जी का ललाट ब्रह्मचर्य के तेज से दमक रहा था। स्वामी जी को देखकर उसका कलुषित हृदय कांप उठा था। स्वामी जी ने उस स्त्री को देखा तो स्वभाववश वे उसे माता कहकर संबोधित करने लगे। उस स्त्री ने स्वामी जी से कहा कि मैं आप जैसा पुत्र चाहती हूं। स्वामी जी ने कहा कि मेरे जैसा क्यों मां- आज से मैं ही आपका पुत्र हूँ। इतना सुनते ही उस स्त्री के आंखों में पश्चाताप के आंसू झर झर गिरने लगे। कुछ ही देर बाद प्रपंचकारी भी वहां एकत्रित हुए। सारा माजरा समझने के बाद वे वहां से खिसक गए। स्वामी जी के अखण्ड ब्रह्मचर्य और नारी के प्रति उनकी उज्ज्वल दृष्टि का यह प्रमाण है।

पता : बी.आई.टी. दुर्ग (छ.ग.)

लोकप्रिय हो रहा है आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

- युवा पीढ़ी का बढ़ा रुझान -

अभियानात्मक

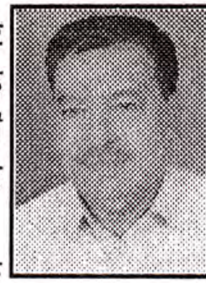

विवाह पद्धति किसी भी समाज की दशा और दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, यदि विवाह पद्धति रूढ़िवादी है तो निर्मित समाज भी रूढ़िवादी ही होगा। आर्यसमाज ने हमेशा से रूढ़िवादी मान्यताओं का विरोध किया है, इसी कारण वह रूढ़िवादी विवाह पद्धति का भी विरोधी है।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार युवक तथा युवतियाँ युवावस्था में गुरु से अनुमति प्राप्त कर परस्पर अपने गुणकर्म तथा स्वभाव के सदृश युवक व युवती से ही विवाह करें, क्योंकि सदृश गुणकर्म स्वभाव वाले व्यक्ति से विवाह करने पर परिवार में स्नेह तथा प्रेम रूढ़िवादी विवाह पद्धति की अपेक्षा अधिक दृढ़ होता है तथा संतान भी संस्कारित होती है। किन्तु दीर्घकालीन अवलोकन से दृष्टिगोचर हुआ कि आर्यसमाजी परिवारों के युवक-युवतियों के विवाह आर्यसमाजी परिवार के युवक-युवतियों से नहीं हो पा रहा है, तथा आर्य समाजी परिवार से इतर परिवारों में विवाह होने के कारण पीढ़ीगत पद्धति से आर्यसमाज का विकास नहीं हो पाया।

इस कारण आर्य विद्वानों एवं मनीषियों ने विचार किया कि आर्यसमाजी परिवार के युवक-युवतियों को परस्पर सदृश गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार विवाह करने के लिए उचित मंच प्रदान किया जाय। जिसकी परिणिति आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेन के रुप में हुई। इसकी शुरुआत सन् २०१० में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा की गई। उसके बाद से क्रमशः द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम सम्मेलन आयोजित किये जा चुके हैं। उनके परिणाम भी उत्साहवर्द्धक रहे हैं। पिछले सम्मेलनों के आशातीत परिणामों के कारण आर्य परिवारों के सम्बन्धों की संख्या बढ़ी है तथा युवा पीढ़ी इन सम्मेलनों की ओर आकर्षित हो रही है। इसीलिए आर्य परिवारों की मांग पर यह सम्मेलन इस बार इन्दौर (म.प्र.) एवं दिल्ली दो स्थानों पर आयोजित किए जा रहे हैं। शाकाहारी खान-पान एवं शुद्धि विचारों वाले व्यक्तियों को जोड़ने का यह एक प्रभावशाली अभियान है। इससे भविष्य में सार्थक परिणाम सामने आएंगे।

वर्तमान के इस काल में टूटते पारिवारिक परिवेश में अवमूल्यन होती नैतिकता के इस दौर में यह और भी आवश्यक हो गया है कि युवा पीढ़ी को उचित अवसर मिले, जिससे संस्कारवान पीढ़ी का निर्माण होवे तथा आर्यसमाज की ओर नयी पीढ़ी का रुझान बढ़े। साथ ही इससे आर्यसमाज का संगठन और भी मजबूत होगा, जिससे वैदिक विचारधारा का अधिक से अधिक परिवारों में प्रचार प्रसार होगा।

- अर्जुनदेव चड्ढा

संस्मरण

पंजाब केशरी लाला लाजपतराय

२८ जनवरी जन्म दिवस पर विशेष

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

आर्यसमाज के जिन महापुरुषों ने स्वदेश हित के लिए सर्वोत्कृष्ट बलिदान किए उनमें लाला लाजपतराय का नाम चिरस्मरणीय है ये वही बलिदानी थे जिन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया था कि राष्ट्रभक्ति का पाठ उन्होने स्वामी दयानन्द से सीखा था । और आर्य समाज रूपी माता की गोद में बैठकर ही वे स्वदेश हित के लिए कुछ कर पाये । जन्म से वैश्य किन्तु गुण, कर्म एवं स्वभाव से क्षत्रिय लाजपतराय का जन्म पंजाब प्रान्त के जिला फरीदकोट के एक गांव ढुंदिके में २८ नवंबर १८६५ को हुआ । उनके पिता लाला राधाकृष्ण उर्दू फारसी के अच्छे जानकार तथा पेशे से अध्यापक थे । उन्होंने इस्लाम की शिक्षाओं का गहराई से अध्ययन किया था । दीनेमुहम्मदी में उनकी गहरी आस्था थी । अग्रवाल बनिया होते हुए भी वे नियमित रूप से नमाज पढ़ते थे, रमजान के महीने में रोजा रखते थे । १८८० में एण्ट्रेस की परीक्षा पास कर लाला लाजपतराय लाहौर आए । गर्वमेंट कालेज से एफ.ए. तथा कानून की मुख्तारी परीक्षाएँ साथ-साथ उत्तीर्ण की । १८८२ में वर्ष के वर्ष में लाहौर में ही वे आर्यसमाज के सम्पर्क में आये, लाला साईदास की प्रेरणा से वे समाज के सदस्य बने । पं. गुरुदत्त तथा लाला हंसराज जैसे युवक जहां कालेज में लाला लाजपतराय के सहपाठी थे वहां ये लोग आर्यसमाज में भी उनके सहयोगी कार्यकर्त्ता थे । जब ३० अक्टूबर १८८३ को आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द का अजमेर में निधन हुआ । तब आर्यसमाज लाहौर की ओर से ८ नवंबर को एक शोकसभा का आयोजन किया गया । इसमें निश्चय हुआ कि दिवंगत महर्षि की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज के नाम से एक ऐसी शिक्षण संस्था की स्थापना की जावे जिसमें संस्कृत एवं हिन्दी के उच्च स्तरीय शिक्षण, वेदादि शास्त्रों की गंभीर शिक्षा के साथ-साथ पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान तथा अंग्रेजी भाषा के अध्ययन की व्यवस्था हो । डी.ए.वी. कालेज लाहौर की स्थापना तथा संचालन में लाला लाजपत राय का भी मूल्यवान सहयोग रहा। वे विभिन्न प्रतिनिधि मंडलों के सदस्य बनकर कालेज की स्थापना हेतु धन संग्रह के लिए देश के विभिन्न नगर में जाते रहे । जब यह महाविद्याय सुचारु रूप से चल पड़ा तब इसकी शिक्षा में नीति को प्रभावी एवं गतिशील बनाने में लालाजी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही । कालान्तर में डी.ए.वी. कालेज में संस्कृत तथा वेदादि शास्त्रों के पाठ्यक्रम के स्वरुप और उसकी रूपरेखा को लेकर आर्य नेताओं में अनेक प्रकार के मतभेद उभर आए । किन्तु लालाजी ने इस विवादास्पद विषय पर पर्याप्त संतुलित दृष्टिकोण अपनाया।

१९२० में महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन चलाए गये और सरकारी स्कूलों और कालेजों के बहिष्कार की बात आई । तब लाला लाजपतराय ने भी डी.ए.वी. कालेज के संचालकों को देश की आजादी के महत्तर उद्देश्य को समक्ष रखकर कुछ काल के लिए कालेज को बंद कर देने का सुझाव दिया । यह दूसरी बात है कि महात्मा हंसराज ने ऐसा कदम उठाने से इन्कार कर दिया । उनकी दृढ़ धारणा थी कि किसी तात्कालिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण तथा स्थायी हित के कार्य की बलि नहीं दी जा सकती है । लाला लाजपतराय ने १८८५ में वकालत की परीक्षा पास की । कुछ काल तक रोहतक तथा हिसार में वकील के रूप में कार्य करने लगे । शीघ्र ही उन्हें अपने कार्य में आशा से अधिक सफलता मिली । कानून के पेशे में भी उनकी प्रतिष्ठापूर्ण स्थिति थी । १८८८ में वे कांग्रेस आन्दोलन से जुड़े प्रथम बार वे इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए । १९०६ में वे पं. गोपाल कृष्ण गोखले के साथ कांग्रेस शिष्टमंडल के सदस्य के रूप में इंग्लैण्ड गए । वहां से वे अमेरिका चले गए और देश की स्वतंत्रता के लिए पश्चिमी देशों में अनुकूल वातावरण बनाया । लाला जी ही प्रथम महापुरुष थे जिन्होंने राष्ट्रीय महासभा में पूर्ण आजादी प्राप्त करने के विचारों का प्रसार किया और ब्रिटिश

ताज के अन्तर्गत रहकर देश को सीमित स्वतंत्रता प्राप्त करने के कांग्रेस के आदर्श का विरोध किया। उन्होंने लोकमान्य तिलक तथा बंगाली नेता विपिन चन्द्र पाल के सहयोग से कांग्रेस में उग्रवादी गरम विचार धारा का प्रवेश कराया। उन्होंने १९०५ में बनारस में ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन के समय उनका स्वागत करते का डटकर विरोध किया। सूरत कांग्रेस में लोकमान्य तिलक और लाला लाजपतराय ने कांग्रेस की नरम नीतियों का प्रबल विरोध किया था इसका परिणाम कांग्रेस में पड़ी फूट के रूप में प्रत्यक्ष हुआ और पं. मदनमोहन मालवीय, रासबिहारी घोष तथा फिरोज शाह मेहता आदि नरम नेताओं ने महसूस कर लिया कि भारत अब भावी राजनीति को स्वरूप देना लाला लाजपतराय और उनके साथियों के अधिकार में आ गया है।

पंजाब में किसान जागृति और उससे उत्पन्न क्रान्तिकारी राजनैतिक चेतना के सूत्रधार लालाजी ही थे। उनके और सरदार अजीत सिंह के जोशीले व्याख्यानों से भयभीत होकर तत्कालीन शासन ने उन्हें देश से निर्वासित कर बर्मा के माण्डले नगर में नजरबंद कर दिया। किन्तु शासकों के इस अत्याचार पूर्ण कृत्य के प्रतिरोध में उठे प्रबल जनमत की अवहेलना करना सरकार के लिए संभव नहीं था लालाजी तथा सरदार अजीतसिंह को शीघ्र ही रिहा करना पड़ा। स्वदेश लौटने पर एक लोकप्रिय जननायक के रूप में उनका स्वागत हुआ और जनता उन्हें इस आंखों में उठा लिया।

आर्यसमाज में रहकर ही लाला जी ने जनहित के कार्यों में भाग लेना सीखा था। १९११ में जब सम्पूर्ण उत्तर भारत अकाल की चपेट में आ गया तब लालाजी अपने साथियों को लेकर अकाल राहत कार्यों में जुट गए। उन्होंने अनाथ बालकों को आर्य अनाथालय फिरोजपुर में प्रवेश कराया, जबकि ईसाई मिशनरी उन्हें लेने को तैयार बैठे थे। १९०५ में कांगड़ा में भयंकर भूकंप ले जन-धन की अपार क्षति हुई। उस समय भी वे भूकंप पीड़ितों की सहायता के लिए दुर्गम पर्वतीय स्थलों पर पहुंचे। इस कार्य में डी.ए.वी. कालेज लाहौर के छात्र लालाजी के साथ थे। उड़ीसा, मध्यप्रदेश तथा संयुक्त प्रान्त में जब १९०७ में भयंकर दुष्काल पड़ा तब लालाजी तुरंत सहायता कार्यों में जुड़ गए। अब तक लालाजी देश के राजनैतिक क्षितिज पर एक प्रकाशमान नक्षत्र की भांति उभर चुके थे। १९२० में विदेश यात्रा से लौटने पर उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा प्रवर्तित असहयोग आन्दोलन पर समर्थन किया। इसी वर्ष कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष बनाए गए। १९२४ में उन्होंने स्वराज्य पार्टी का गठन किया और केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य चुने गए स्वामी श्रद्धानन्द पं. मदनमोहन मालवीय की ही भांति लालाजी का कांग्रेस की अल्पमत वालों के प्रति तुष्टिकरण की नीति से घोर मतभेद था। इसलिए उन्होंने हिन्दू सभा सच्चे राष्ट्रवादी नेताओं की दृष्टि में संकीर्ण या साम्प्रदायिक जमात नहीं समझी जाती थी।

१९२८ में भारत की राजनैतिक स्थिति का जायजा लेने के लिए इंग्लैण्ड से सायमन कमीशन यहां भेजा गया कांग्रेस ने इसका बहिष्कार का निर्णय लिया। ३० अक्टूबर को कमीशन लाहोर आया। नागरिकों ने कमीशन के सदस्यों को रेल्वे स्टेशन पर ही काले झंडे दिखाने का निश्चय किया। पंजाब सरकार ने धारा १४४ लगा दी। तथापि सैकड़ों लोग स्टेशन पर एकत्र हो गए। सायमन वापस जाओ के नारों से आकाश गूंज उठा। पुलिस को डण्डे बरसाने का आदेश मिला निहत्थे नागरिकों पर डण्डा प्रहार होने लगा। अंग्रेज सार्जेंट सांडर्स ने लालाजी की छाती पर लाठी का प्रहार किया। भारत के इस बूढ़े शेर को मार्मिक आघात पहुंचा। उसी सायंकाल आयोजित जनसभा में नर केसरी लाला लाजपतराय ने गर्जनापूर्ण स्वर मेंकहा कि मेरे शरीर पर पड़ी विदेशी सरकार की एक-एक लाठी अंग्रेजी राज्य के कफन की कील साबित होगी। इसी लाठी प्रहार से पीड़ित लाला लाजपतराय का १७ नवंबर १९२८ को निधन हो गया।

लालाजी का व्यक्तित्व बहु आयामी था। वे एक श्रेष्ठवक्ता, प्रभावशाली लेखक, सार्वजनिक नेता और कार्यकर्त्ता, समर्पित समाज सेवक, शिक्षा शास्त्री गंभीर चिंतक तथा विचारक थे। उन्होंने उर्दू तथा अंग्रेजी में अनेक उत्कृष्ट ग्रन्थों की रचना की भारत तथा विदेश के कतिपय महापुरुषों के उनके द्वारा लिखित जीवन चरित अत्यंत लोकप्रिय हुए। सम्राट अशोक, शिवाजी, स्वमी दयानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी तथा योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र तो उन्होंने लिखे ही इटली के देशभक्त तथा मैजिनी के जीवन चरित्रों ने उन्हें अभूतपूर्व ख्याति दिलाई। देशवासियों में स्वातंत्र्य चेतना जागृत करने में इन ग्रन्थों की भूमिका इतनी महत्त्वपूर्ण मानी गई कि विदेशी शासन में उन जीवनियों पर प्रतिबंध लगा दिया। भारतीय शिक्षा तथा अर्थशास्त्र जैसे विषयों पर भी उन्होंने प्रामाणिक ग्रन्थ लिखे। उनकी लिखी दि आर्यसमाज नामक पुस्तक १९१४ में प्रकाशित हुई। लाला जी ने अपनी आत्म कथा भी लिखी है।

पता : ८/४२३, नन्दनवन, जोधपुर (राज.)

आरोग्य

वैदिक दर्शन आरोग्य और होमियोपैथी

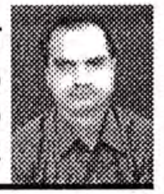

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबन्ध रायपुर (छ.ग.)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

आमयोगश्च भूतानां जायते येन सुव्रत।
तदैव ह्यामयं द्रव्यं न पुनाति चिकित्सकम्।।

अर्थात् :- प्राणियों को जिस पदार्थ के सेवन से जो रोग हो जाता है, वही पदार्थ चिकित्सा विधि के अनुसार प्रयोग करने पर उस रोग को दूर नहीं करता ?

शताब्दियों से विश्व चेतना के आकाश में यह प्रश्न गूंजता रहा समय समय पर "**समः समं शमयति विषस्य विषमौषधं कष्टके नैव कण्टकम्**" जैसी प्रतिध्वनियाँ इधर उधर से आती रही पर होमियोपैथी के जन्मदाता ने "**सिमिथिा सिमिलबस क्यूरेन्टर या लेट सिमलर बी ट्रीटेड बाई सिमलर या ह्वाट काजेस ए कण्डीशन हैज कैपिसिटी टू क्योर इट**" के उद्घोश के साथ होमियो चिकित्सा विज्ञन के रुप में उसका विस्तार से जो समुचित उत्तर दिया है व अनुपम या बेजोड़ है।

कहाँ पूर्व शिक्षा से उठा हजारों वर्ष वैदिक ग्रन्थ का प्रश्न और कहां पश्चिम से आने वाला उत्तर ?

ऐसा मालूम पड़ता है मानों दोनों दिशाएँ एक दूसरे के आमने सामने होकर शास्त्रार्थ कर रही है या विश्व चेतना यह सिद्ध कर रही है कि वह समय, देश और भाषाओं के बंधन से परे हैं। इस समस्त ब्रह्माण्ड में समान रुप व्याप्त एक ही सत्य है कि शाश्वत सत्य है जिसमें न पूर्व है और न ही पश्चिम है। ऋषियों के द्वारा आरोग्य मन्त्र को महात्मा हैनिमेन ने अपनी सूझबूझ और सूक्ष्म बुद्धि से उसके आत्मा को पहचाना। इस पावन यज्ञ की निरंतर प्रज्वलित रहने वाली अग्नि शिखाओं ने और उसकी अमृतोपम जीवन सुगन्ध ने समूचे विश्व को नया प्राण और नई चेतना प्रदान की है।

दीर्घ रोग क्या है ?

जन्म मरण का एक चक्र ही दीर्घ रोग है, बाकी सर्दी, खांसी, बुखार तो साधारण और रोजमर्रा के रोग है। यह दुनिया रोगों से ग्रस्त लोगों की दुनिया है। जैसे कि गुरुनानक देव जी महाराज ने कहा है कि "नानक दुखिया सब संसार" महात्मा कबीरदासजी ने कहा कि "जो देखा सो दुखिया देखा तनधरि सुखिया न देखा" कविवर सुमित्रानंदन पन्त के अनुसार "जग पीड़ित है अति सुख से जग पीड़ित है अति दुख से"।

भारतीय अध्यात्मिक दर्शन इस मन को ही उन सभी दीर्घ रोगों का कारण मानते हैं। "मन एवं मनुष्याणामं कारणम् बन्ध मोक्षणे" होमियोपैथी के जन्मदाता महर्षि हैनिमेन ने भी रोगों की उत्पत्ति तथा निवरण कोमन ही माना है। वे कहते हैं कि रोग की नहीं वरन् रोगी की चिकित्सा करनी चाहिए।

अब प्रश्न उठता है कि रोगी पंचभूतों द्वारा निर्मित केवल पार्थिव शरीर नहीं ? वरन् इसमें रहने वाला सूक्ष्म अंतरात्मा जो मन, बुद्धि, चित्त, अहंकारयुक्त अन्तःकरण वाला है। वह व्यापक चेतना जो उन सबको संस्थापित करती है, इसका नियंत्रण करती है, जिसे सरल तत्व कहा महात्मा डॉ. कैण्ट ने अपने अद्भुत ग्रन्थ में लेक्चर ऑन होमियोपैथी फिलोसफी के अध्याय ९ में परिभाषित किया है कि विश्व चेतना की वह किरण जो इसके कण-कण को प्रकाशित करती है, उसे जीवित रखती है, उसे जीवनी शक्ति (वायटलफोर्स) होमियो का प्राण सूक्ष्मता और शक्तिकरण का मूल सिद्धांत छिपा पड़ा है।

यदि रोग मन में जन्म लेता है तो दूर भी किया जा सकता है। पवित्र चिन्तन से पहले अन्तःकरण निर्मल होता है। उसका प्रभाव शरीर पर पड़ता है और रोग अपने मूल से नष्ट हो जाता है। इसलिए स्वस्थ एवं सुखी रहने के लिए यजुर्वेद कहता है "**तन्मेमनः शिव संकल्पमस्तु**" अर्थात् मेरा मन मन अच्छे कल्याणकारी विचार वाला है मर्यादा पुरुषोत्तम का उदान्त चरित्र-

रघुवंसिन कर सहज सुभाउ, मन कुपंथ पग धरेइ न काउ।
मोहि अतिसय प्रतीति जिय केरी,
जोहि सपने हू पर नारि न हेरी।।

जागृत तो क्या स्वप्न में भी पर नारी का चिन्तन नहीं

शेष पृष्ठ ३० पर

स्वास्थ्य-चर्चा

आयुर्वेद से आरोग्य

सौजन्य - श्री दीनानाथ वर्मा

पौष्टिक योग :-

सोंठ, शतावर, असगंध, सफेद मुसली, काली मुसली, गिलोय, हरड़, नागबला (खरैटी), मिश्री प्रत्येक ५०-५० ग्राम लेकर चूर्ण कर रखें। प्रतिदिन सोने के समय कुनकुना दूध के साथ एक-एक चम्मच सेवन करें। इससे शरीर स्वस्थ और रोगरहित रहेगा।

बिच्छू डंक चिकित्सा :-

बिच्छू के काटे स्थान से रक्त निकालकर आक का दूध लगाने से विष उतर जाता है।

सर्प विष चिकित्सा :-

सोंठ चूर्ण ५ ग्राम, काली मिर्च (मरीच) चूर्ण १० ग्राम, घी (गाय का) ५० ग्राम मिलाकर पिलाने से सर्प का जहर उतर जायेगा।

अंकुरित अनाज से पायें स्वास्थ्य :-

अंकुरित अनाज एनर्जी का अच्छा स्रोत है। इसमें फाइबर, विटाविन बी-१- बी-२, बी-३ और प्रोटीन, कार्बोहाईड्रेड काफी मात्रा में होता है।

१०० ग्राम अंकुरित अनाज (गेहूँ १ चम्मच, साबूत मूंग १ चम्मच, देशी चना १ चम्मच, मेथी दाना १ चम्मच)।

विधि :- उपरोक्त चारों अनाज को अच्छी तरह से पांच पानी धोकर एक कप पानी डालकर २४ घंटा रख दें। तत्पश्चात् पानी को निथारकर अनाज को मोटा सूती कपड़े में बांध कर २४ घंटे के लिए लटका दें। इस प्रकार प्रतिदिन आपको अंकुरित अन्न की प्राप्ति हो जायेगी। इससे व्यक्ति स्वस्थ और तरोताजा रहता है।

सेहत के लिये बादाम :-

बादाम में एनर्जी बढ़ाने वाले सभी आवश्यक तत्व पायें जाते हैं। इसमें मेग्नीज, विटामिन-ई, कॉपर और विटामिन १२ भरपूर मात्रा होते हैं। सुबह-सुबह बादाम खाने से दिमाग तेज होता है और पूरे शरीर में ताजगी मिलती है। १० बादाम पानी में भिंगाकर, छिलका उतारकर सुबह रोजाना दूध के साथ लेना बेहतर होता है।

सेहत के लिये दही बिल्कुल सही :-

दही में केल्शियम पाया जाता है। जिससे हड्डी में मजबूती होती है। मोलेबेदिनम, जिंक, विटामिन-२, बी-५ पाया जाता है। रोजाना १०० ग्राम दही का भोजन के साथ सेवन करना लाभकारी होता है।

नोट :- न नक्तं दधि भूञ्जीत् (आयुर्वेद) अर्थात् रात में दही का सेवन नहीं करना चाहिए।

छाती में जमा कफ हटाना :-

(१) सोंठ चूर्ण, मुलैठी चूर्ण आधा-आधा चम्मच मिलाकर पानी के साथ खाने से छाती में जमा कफ कम होता है।

(२) शितोपलादि चूर्ण शहद के साथ खाली पेट खाने से कफ (बलगम) निकल जाता है।

मात्रा : वयस्क के एक चम्मच व बच्चों के लिए आधा चम्मच।

मुखवास :-

सौंफ १०० ग्राम, अजवाईन १०० ग्राम, सेंधा नमक ३० ग्राम, दो बड़े नींबू का रस मिलाकर तवा में सेंक लें। जब बीड़ी, सिगरेट पीने की आवश्यकता महसूस हो तब मुखवास लो। बीड़ी सिगरेट की तलब दूर जायेगी। मुखवास से मुंह का गंध सुधरेगा और रक्त शोधन होगा।

प्रातराश (नाश्ता) :-

लहसून, अदरक, हरी मिर्च युक्त अंकुरित अन्न का नाश्ता अति उत्तम प्रातरास है। यह स्वास्थ्यवर्धक है।

स्मरणशक्ति वर्धक नुस्खा :-

गिलोय, अपामार्ग की जड़, वायबिडंग, शंखपुष्पी, वचा, हरीतकी, कूठ और शतावर - इनकी समान मात्रा लेकर चूर्ण करके ३ दिन तक घृत के साथ सेवन करने से मनुष्य १००० श्लोकों को कण्ठस्थ कर लेने योग्य हो जाता है।

पता : मकान नं. डी-119/1, टैगोर नगर,
रायपुर - 492001 (छ.ग.)

ज्वलन्त प्रश्न

भ्रूण हत्या महापाप

बेटी की करुण पुकार

ले. **वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य**, कुलपति गुरुकुल हरिपुर

माँ ! मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है..? मुझ अबोली, अजन्मी, असहाय को काट-काट कर टुकड़े-टुकड़े करवा कर बेरहमी से निर्मम हत्या करवा रही हो। ममतामयी माँ, तू डाकिन क्यों बन रही है? अपनी एक अंगुली काटकर देख.... क्या सह लेगी .... ? मुझे मत मार, कुकर्मों के फल भोगने ही पड़ेंगे।

पिता ! आप तो परमेश्वर के समान हो फिर क्यों मुझ निर्दोष की निर्दयतापूर्ण हत्या कर हत्यारे बन रहे हो ?

डॉक्टर ! क्यों चन्द रुपयों के लालच में लाचार होकर जल्लाद से बदतर नर-पिशाच बने हो ? क्यों अपनी शिक्षा को मानव विकास में लगाने के बजाय मानव के सर्वनाश में लगा रहे हो ? जो कोख में कत्ल कर मेरे शरीर, हाथ, पैर, सिर आदि अंगों को काट रहे हो.... क्यों अपना व अपने परिवार का सर्वनाश करने पर उतारू हो रहे हो .... ? ऐसा मत करो।

लिंग सोनोग्राफी करने वाले ! क्यों मेरी हत्या में सहयोगी बनकर प्रकृति का सन्तुलन बिगाड़रहे हो ? पाप के भागीदार बन रहे हो।

समाज ! मैं आपकी बेटी हूं .... मुझे बचाओ। मैं बचूंगी तो ही दुनिया बचेगी.. मुझे मत मारो.... कोख में कत्ल कर क्यों पाप कर्मों को प्राप्त कर दर्दनाक नारकीय दुःखों को आमन्त्रण दे रहे हो ? आप सोचो, समझो और मुझे बचाओ ही....

पता : ग्राम जुनवानी, पोस्ट - गोड़फूला, जि. नुआपाड़ा (उड़ीसा) ७६६१०९

कविता

बेटियाँ

हैं समस्या बेटे गर, समाधान है बेटियाँ
तपती धूप में जैसे, ठंडी छाँव हैं बेटियाँ।
होकर भी धन पराया है, सच्चा धन अपना
दिखावे की दुनियां में, गुप्तदान है बेटियाँ।
अपनी बदहाली की, की सबने बहुत चर्चाएं
है ढाँपती कमियों, को मेहरबाँ है बेटियाँ।
तनाव भरी गृहस्थी में है, चारों ओर तनाव
व्यंग्य-बाणों के बीच, जैसे ढाल है बेटियाँ।
हैं दूर वे हम सबसे, है फिक्र उन्हें हमारी
करती दुआएँ छद्म , खैर ख्वाह है बेटियाँ।
है बेटा कुल दीपक, घर ये रोशन जिससे
दो घर जिससे है रोशन, आफताब है बेटियाँ।
है लोग वे जल्लाद, जो खत्म उन्हें हैं करते
टिका जिनसे परिवार, वह बुनियाद है बेटियाँ।
माँगती है मन्नत, बेटा की खातिर दुनिया
अपनी नजर में दोस्तो, महान हैं बेटियाँ॥

प्रस्तौत्री : **समीक्षा आर्या**, नन्दिनी नगर, भिलाई (छ.ग.)

समाचार प्रवाह

आर्यसमाज सेक्टर-६ भिलाई का ५४वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

भिलाई। आर्यसमाज सेक्टर -६ का त्रि-दिवसीय ५४वाँ वार्षिकोत्सव एवं अथर्ववेद महायज्ञ का कार्यक्रम २० से २२ दिसम्बर २०१३ तक सम्पन्न हुआ। इसकी पूर्व संध्या पर एक भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम सोपान सदन, नेहरु नगर, भिलाई में आयोजित किया गया। भारत के ख्याति प्राप्त विद्वानों ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इनमें गुरुकुल आमसेना के संस्थापक स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, बिजनौर उत्तर प्रदेश के भजनोपदेशक पं. योगेशदत्त जी, रोहतक हरियाणा से आचार्य सत्यव्रत जी एवं छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य जी प्रमुख थे।

कार्यक्रम का उद्घाटन २० दिसंबर २०१३ को ध्वजारोहण कर किया गया। रोज प्रातः यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं संध्या को भजन व प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रथम दिवस पर दोपहर को शालेय छात्राओं के लिए विशेष भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम हुआ। द्वितीय दिवस पर यज्ञ के दौरान बालकों का उपनयन संस्कार भी कराया गया।

अंतिम दिन यज्ञ की पूर्णाहुति दी गई। गुरुकुल आश्रम आमसेना से आए ब्रह्मचारियों द्वारा योग व व्यायाम प्रदर्शन किया गया। इनमें लाठी व भाळा चालन, तीरंदाजी, तलवार बाजी प्रमुख थे। गले व आंख से लोहे का सरिया मोड़ना देख उपस्थित जन समुदाय स्तब्ध रह गया। योग आसन द्वारा विभिन्न आकृतियों का प्रदर्शन किया, जिसे आर्यजनों ने खूब सराहा। कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्री रवि आर्य एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री अवनी भूषण पुरंग प्रधान द्वारा किया गया।

संवाददाता : रवि आर्य, मंत्री आर्यसमाज सेक्टर-६, भिलाई

दैनिक योग एवं साधना कक्षाएँ

(सेवानिवृत्त जनों के लिए शुभ अवसर)

आप सभी वैदिक धर्मानुरागी आर्यजनों को यह सूचित करते हुए हमें महान् हर्ष हो रहा है कि छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के विगत उपवेशन में निर्णयानुसार, आने वाली जनवरी माह से दुर्ग स्थित सभा कार्यालय दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) में सेवानिवृत महानुभावों के लिए एक **योग साधना प्रशिक्षण केन्द्र** की स्थापना की है, जिसमें सेवानिवृत्त जनों को वैदिक सिद्धान्तानुकुल साधना एवं संस्कारों का विशेष प्रशिक्षण अधिकृत विद्वानों के सानिध्य में एक सप्ताहपर्यन्त दिया जाएगा। उसके पश्चात् भी कोई जिज्ञासु स्वाध्याय साधना के लिए रुकना चाहेंगे, उनका भी स्वागत होगा। योजना का उद्देश्य आश्रम परम्परानुसार जीवन को स्वस्थ उन्नत एवं सुखी बनाकर समाजोपयोगी बनाना है।

नोट :- प्रथम चरण में उपर्युक्त योजना है, भविष्य में ब्रह्मचारी, गृहस्थ एवं संन्यास की तैयारी के लिए भी प्रशिक्षण सत्र होंगे।

: अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : श्री दिलीप आर्य (उपमंत्री कार्यालय) ९६३०८०१२५७, सभा कार्यालय नं. ०७८८-२३२२२२५, ४०३०९७२

गुरुकुल हरिपुर द्वारा वेद प्रचार एवं सहायता शिविर

हरिपुर। गुरुकुल हरिपुर विगत तीन वर्षों से विभिन्न प्रान्तों में वेद प्रचार, समाजसेवा एवं शिक्षा, संस्कारों के कार्यों में निरन्तर लगा हुआ है। इसी क्रम में ओड़िशा के नवरंगपुर जिला जो कि जंगल एवं पहाड़ों से घिरा हुआ है, जहां के निवासी शिक्षा एवं संस्कृति से ८०-९० प्रतिशत वंचित है, जहां के स्त्री एवं पुरुष अब भी तन को ढकने के लिये पूरे कपड़े भी नहीं पहनते, जहां के दो-तीन विकासखंडों के गांवों में किसी भी संस्था के द्वारा यज्ञ आदि कार्यक्रम भी नहीं कराया गया। ऐसे क्षेत्र में पहुंचकर गत १६-१७ नवंबर २०१३ को गुरुकुल हरिपुर के तत्वावधान में ६०० निर्धन परिवारों को चयनकर पापराहाण्डी विकासखण्ड के केन्दुगुड़ा, नुआकोट एवं गणभटा को केन्द्र बनाकर तीनों केन्द्रों में यज्ञ एवं प्रवचन कार्यक्रम के साथ-साथ प्रत्येक निर्धन परिवोर को २५-२५ किलो चावल जिसका २० रु, प्रति किलो की दर से ५०० रु. एवं एक साड़ी जिसका मूल्य २०० रु. है। इस प्रकार एक परिवार को ७०० रु. का सहयोग प्रदान करने की व्यवस्था जनसहयोग से की गई थी।

यह समस्त कार्यक्रम गुरुकुल के कुलपति सेवावीर महत्मा वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य (कोलकाता) गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य एवं दिलीप कुमार जिज्ञासु के प्रत्यक्ष उपस्थिति में तथा गुरुकुल के कार्यकर्त्ताओं एवं स्थानीय लोगों के पुरुषार्थ से सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल हरिपुर का वार्षिक महोत्सव

आप सबको सूचित करते हुए हमें हर्ष हो रहा है कि गुरुकुल हरिपुर का चतुर्थ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिक महोत्सव १०,११,१२ जनवरी २०१४ को अनेक प्रेरक सम्मेलनों नारी जागृति सम्मेलन. वैदिक परिवार सम्मेलन, संस्कार रक्षा सम्मेलन तथा गुरुकुल सम्मेलन के साथ स्वनामधन्य अनेक वैदिक पूज्य संन्यासियों एवं विद्वानों की पवित्र उपस्थिति में सम्पन्न होने जा रहा है।

संवाददाता : दिलीप कुमार जिज्ञासु, आचार्य गु.हरिपुर

पृष्ठ २६ का शेष

करते यह है कि पूर्ण स्वस्थ और निरोग मन की ओर विष पवित्र अवस्था। इन्हीं उत्तम विचारों से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों फलों की प्राप्ति हो सकती है।

दीर्घ रोग से छुटकारा पाने का यही मार्ग है ओज का नाश होना निश्चित ही विनाश है, उत्साह प्रतिभा और धैर्य आदि पुरुषौचित गुणों का अनिर्ममभाव इसी ओज के ऊपर अवलंबित होता है। वीर्यक्षय से शरीर का ओज पलायन हो जाएगा। ओज में जीवन है और ब्रह्मचर्य से ही उसकी रक्षा हो सकती है। ओज को हम होमियोपैथी जीवनी शक्ति (वायटलफोर्स) कहते हैं।

धर्मार्थ काम मोक्षणाम् आरोग्यम् मुलमुत्तमम् (चरक) होमियोपैथी के जन्मदाता महर्षि हैनिमेन ने अमृत के कुछ बून्दे होमियोपैथी के रुप में उस हाहाकार भरी वसुधा पर विचरने वाले प्राणियों के मन, प्राम और शरीर को चिर सुखी बनाने के लिए धनवन्तरी के रुप में प्रकट हुए यह अमृत घट हमारे लिए सामने प्रतिष्ठित किया गया है। इस अखिल ब्रह्माण्ड के कण कण से व्याप्त विशाल चेतना की कोई सीमा नहीं वह देशकाल से परे हैं। होमियोपैथी का यह अध्यात्म (वैदिक) दर्शन कितना विशाल है। यह हमारी कल्पना से परे है। यह एक सार्वभौम सत्य है और यही कारण है कि भारतवर्ष ने होमियोपैथी को सहज भाव से अपनाया है।

यदि हमारा भारतवर्ष २८०० वर्ष के महात्मा चरक की शिक्षा का अनुसरण करता तो हर भारतवासी का दैनिक जीवन् यशमय हो जाता। चिकित्सक बड़ा ही भाग्यशाली है उसका दैनिक जीवन धर्म के कार्य में लगा रहता है। चिकित्सा एक व्यवसाय नहीं वरन् पीड़ित मानवता की सेवा का एक महान् कार्य है। वह अपने देशवासी भाई बहनों के आरोग्य की रक्षा करता है। वह सचमुच राष्ट्र के स्वास्थ्य की रक्षा का सजग प्रहरी है।

होमियो चिकित्सा विज्ञान में केवल भारत की नहीं वरन् समूचे विश्व का उज्जवल भविष्य छिपा हुआ है।

विमल हृदय से बहे निरन्तर करुणा धारा,
अखिल विश्व ही परिवार हमारा॥

ग्राम कचना (मेड़ली) धमतरी में धर्मान्तरण के विरुद्ध सभा द्वारा विशेष अभियान

-: सभा पदाधिकारी द्वारा धर्मान्तरण रोकने बाबत् किया गया दौरा कार्यक्रम :-

दिनांक 4 दिसम्बर 2013 को सायंकाल 5 बजे सभा के पदाधिकारी (प्रधान, मंत्री, अन्तरंग सदस्य) आचार्य अंशुदेव आर्य, श्री दीनानाथ वर्मा, पं. काशीनाथ चतुर्वेदी, श्री छबिलसिंह रघुवंशी, चार ब्रम्हचारी (दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर), डॉ. कुलेश्वर निषाद सहित कुल 11 लोग ग्राम कचना गये। डॉ. कुलेश्वर निषाद के बड़े चाचा के घर वैदिक सन्ध्या किया गया। प्रधान जी का सारगर्भित उद्बोधन हुआ, जिसमें भारतीय संस्कृति, आर्य मर्यादा के विषय में विस्तार से चर्चा की गई और धर्मान्तरण के विरुद्ध विचार रखा गया।

दिनांक 5 दिसम्बर 2013 को सायंकाल 4 बजे सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, श्री दयाराम वर्मा (प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर), पं. काशीनाथ चतुर्वेदी, आचार्य आलोक आर्य, डॉ. कुलेश्वर निषाद आदि 10 व्यक्तियों ने ग्राम कचना जाकर, डॉ. कुलेश्वर निषाद के छोटे चाचा के घर संध्या-उपासना करने के बाद कुछ धार्मिक चर्चा कर वातावरण तैयार किया गया, उसके बाद सतनामी समाज सभा भवन कचना में कुछ देर बैठकर चर्चा की गई।

दिनांक 7 दिसम्बर 2013 को सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, आचार्य आलोक आर्य के साथ दोपहर 12 बजे ग्राम खोरपा जाकर आजाद चौक में श्री रुपेन्द्र साहू के घर श्रीमती पिंकी (पत्नी श्री रुपेन्द्र साहू) से 15 मिनट चर्चा किया गया। रुपेन्द्र साहू की पत्नी ने बताया कि वह स्वयं आराधना कराती हैं और यह भी बताया कि रविवार के दिने वृहद रुप से प्रार्थना सभा का आयोजन किया जाता है। ग्राम खोरपा के बाद सभा मंत्री द्वारा ग्राम संकरी का गश्त किया गया। ग्राम संकरी के बाजार चौक स्थित श्री मयाराम साहू सब्जी वाला (मोबा. 9977387856) के घर जाकर श्री केदार राम साहू (मोबा. 9770061596) जो कि श्री मयाराम के बड़े भाई का पुत्र हैं, कु. भुनेश्वरी साहू एवं कु. केवरा साहू (दोनों श्री मयाराम साहू के पुत्री हैं) के मध्य चर्चा की गई, जानकारी ली गई। श्री मयाराम साहू के घर एक कमरा में आराधनालय बनाया गया है, जिसका अवलोकन किया गया। श्री केदार राम साहू से अवगत हुआ कि बड़े पास्टर श्री रामू यादव (मोबा. 9827408908) और पास्टर श्री शत्रुहन विश्वकर्मा (मोबा. : 9098514698), दोनों रायपुर से आकर ग्राम कचना, खोरपा, संकरी आदि ग्रामों में सघन सम्पर्क करते हैं और प्रार्थना सभा का आयोजन करते हैं।

ग्राम कचना में श्री रामकृष्ण साहू, माधव, मिथलेश आदि ग्राम खोरपा में रमेन्द्र, आनन्द, अर्जुन साहू, रुपेन्द्र साहू आदि, ग्राम संकरी में श्री नन्दलाल साहू आदि ईसाई धर्म से बहुत प्रभावित हैं। ग्राम चंडी बाजार (अभनपुर) के श्री चोवाराम (जिसकी पत्नी ईसाई है और सरपंच रह चुकी है) आदि चार-पांच घर ईसाई पादारियों के सम्पर्क में रहते हैं।

सभा मंत्री द्वारा उपरोक्त ग्रामों का दौरा किया गया और यह पाया कि ग्राम मोहदी, खोरपा, संकरी, कचना, चंडी बाजार आदि ग्रामों में बहुसंख्यक हिन्दू, जिसमें विशेषकर साहू, निषाद,देवांगन आदि जाति समाज के लोग ईसाई धर्म में अत्यधिक निष्ठा रखने लगे हैं। करीब चार-पांच वर्षों से ईसाई मिशनरियों की सतत दौरा एवं गतिविधियाँ जारी हैं, कई लोग दीक्षा (बप्तिशमा) ले चुके हैं। दिसम्बर माह में 21 दिन की उपवास (जिसे कलिशिया कहते हैं) चल रहा है, जिसका समापन 22 दिसम्बर को होगा और दिनांक 24, 25 दिसम्बर को उपवास का पारणा (समापन) किया जायेगा। धर्मान्तरण रोकने की अत्यन्त आवश्यकता है, जिसके लिए आर्यसमाज के विद्वानों, उपदेशको, भजनोपदेशकों आदि की टीम पांच गांव में प्रति गांव दो-दो दिन का कार्यक्रम रखना अति आवश्यक है, जिसके लिए प्रांतीय सभा और आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर संयुक्त रुप से अभियान चलायेंगे।

प्रस्तुतकर्ता - दीनानाथ वर्मा, मंत्री

पत्थलगांव में आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर एवं विश्व कल्याण महायज्ञ सोल्लास सम्पन्न

पत्थलगांव (जशपुर)। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज पत्थलगांव एवं रायगढ़ संभागीय समस्त आर्यसमाजों के संयुक्त तत्वावधान में छः दिवसीय निःशुल्क आवासीय आर्यवीर दल प्रशिक्षण, चरित्र निर्माण शिविर एवं विश्व कल्याण महायज्ञ - सरस्वती शिशु मंदिर, पत्थलगांव, जिला जशपुर (छ.ग.) में दिनांक २४ दिसंबर से २९ दिसंबर २०१३ तक अत्यन्त धूमधाम के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

विश्व कल्याण महायज्ञ एवं क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन दिनांक २८ एवं २९ दिसंबर २०१३ को आचार्य सत्यवव्र जी आर्ष गुरुकुल सुन्दरपुर जिला-रोहतक (हरियाणा), आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान, श्री दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री के साथ पं. वेदपाल आर्य भजनोपदेशक बागपत उ.प्र. के सुमधुर भक्ति पूर्ण भजनों के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। दिनांक २८-१२-१३ शनिवार को दोप. २ बजे से ५ बजे तक पत्थलगांव नगर में विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग ४०० लोगों की भागीदारी रही। ब्रह्मचारी रणवीर जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में विश्व कल्याण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में आचार्य सत्यव्रत जी के बहुत ही सारगर्भित उपदेश लगभग ३०० लोगों को सुनने को मिला। आचार्य जी ने बताया कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के द्वारा रचित **आर्योद्देश्य रत्न माला** में बताये गये अनुसार यदि प्रत्येक माता-पिता गृहस्थ आश्रम में रहते हुए अपने बालकों का निर्माण करें, तो वैदिक संस्कृति का उत्तरोत्तर विकास होगा एवं बालक सच्चरित्र होंगे।

छत्तीसगढ़ के किशोर एवं युवाओं के सुनहरे भविष्य की परिकल्पना को साकार रुप देने के लिए निःशुल्क छः दिवसीय आवासीय - आर्यवीर दल प्रशिक्षण व चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ, जिसमें ११० आर्यवीरों ने सक्रिय भागीदारी निभाया। शिविर के संयोजक श्री श्यामसुन्दर जी अग्रवाल और अध्यक्ष डॉ. एल.डी. चेतवानी की सक्रिय भूमिका रही। समापन अवसर पर पत्थलगांव के गणमान्य भद्रजन उपस्थित रहे, जिनमें सर्वश्री रामकिशोर गुप्ता, मुरारीलाल अग्रवाल, सुनील अग्रवाल जिला भाजपा अध्यक्ष, भीखमचंद जी अग्रवाल, शंकरलाल अग्रवाल, नरेन्द्रं कुमार जी आदि के साथ सलखिया से श्री जोगीराम आर्य उपप्रधान, श्री लेखनकार आर्य अंतरंग सदस्य सीतापुर, श्री जगदीश आर्य, श्री महिपत लाल आर्य अंतरंग सदस्य, श्री मोहन कुमार शास्त्री सलखिया, श्री माधोराम आर्य, श्री हेमन्त यादव पालीडीह, श्री रविशंकर आर्य अंतरंग सदस्य पालीडीह, श्री पिरीतराम आर्यसमाज झक्कड़पुर, श्री बीरबल गुप्ता केनसरा, श्री अभिराम आर्य राजगांव, श्री भीखमचंद अग्रवाल कांसाबेल, श्री गणेश आर्य लैलूंगा, श्री ईश्वर आर्य, श्री देवप्रकाश आर्य, श्री रुपेन्द्र आर्य व्यायाम शिक्षक, श्री भुवनेश्वर आर्य, आचार्य सुरेश जी कांसा उपस्थित रहे। श्री बीरबरल आर्य सभा प्रचारक द्वारा कई लोगों को अग्निदूत पत्रिका का सदस्य बनाया गया। शिविर संचालन एवं व्यवस्था में श्री बीरबल आर्य की सक्रिय भूमिका रही। आर्यवीरदल के प्रॉंतीय संचालक श्री जनकराम आर्य एवं प्रधान प्रशिक्षक आर्यवीर दल श्री कपिलदेव जी का सक्रिय भागीदारी रही।

समापन अवसर पर सभा प्रधान जी ने कहा कि विगत एक वर्ष के अन्तर्गत यह १४वाँ आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हो रहा है। सभा द्वारा लाखों रुपये इस मद में खर्च किया जा रहा है और आर्यवीरों में उत्साह का संचार किया जा रहा है। आर्यसमाज के संगठन को इन आर्यवीरों द्वारा नई ऊर्जा मिल रहा है। समारोह में ११० आर्यवीरों के साथ लगभग ३० आर्यवीर गुरुकुल आश्रम सलखिया से पधारे हुए थे। कुल १४० आर्यवारों द्वारा शानदार प्रदर्शन सम्पन्न हुआ ,जिसमें लगभग ४०० की दर्शकदीर्घा उपस्थिति रही, जिसने इस प्रदर्शन का भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

- शिविर स्थल से लौटकर श्री दीनानाथ वर्मा

ग्राम कचना (मड़ेली) जिला धमतरी में धूमधाम से वेद प्रचार सम्पन्न

कचना (धमतरी) । दिनांक २४ दिसंबर २०१३ को सायंकाल ५ बजे सभा मंत्री अपने साथ १० पदाधिकारियों को लेकर ग्राम कचना पहुंचे । सायं ६ से ८ बजे तक पं. वेदपाल आर्य द्वारा सुमधुर भजनोपदेश का आयोजन किया गया, जिसमें ग्राम कचना के लगभग १५० ग्रामवासी उपस्थित रहे । भजनोपदेश के बाद ग्राम के प्रमुख लोगों के आग्रह पर सार्वजनिक सभा स्थल में बैठक रखी गई और ईसाई मत के प्रचार को रोकने की रुपरेखा बनाई गई।

दिनांक २५ दिसंबर २०१३ को सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य के नेतृत्व में सभा के पदाधिकारी, आर्य समाज बैजनाथपारा रायपुर के पदाधिकारी सहित २० लोग रायपुर, दुर्ग-भिलाई से ग्राम कचना पहुंचे । पं. वेदपाल आर्य भजनोपदेशक बागपत (उ.प्र.) द्वारा पूर्वान्ह ११.३० बजे से अपरान्ह ३ बजे तक व्याख्यान, भजनोपदेश आयोजित किया गया। आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान, श्री दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री, डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी (जिला वेद प्रचार अधिष्ठाता रायपुर), श्री दिलीप आर्य कार्यालय उपमंत्री , श्री सोमप्रकाश गिरी उपप्रधान आदि सभा पदाधिकारियों द्वारा धर्म सभा का आयोजन एवं उद्बोधन किया गया।

उल्लेखनीय बात यह रही कि अध्यक्ष धर्म सेना श्री सुबोधकान्त राठी धमतरी द्वारा बहुत ही सारगर्भित उद्बोधन दी गई, जिसमें ईसाई मिशनरियों को ललकारा गया और सत्य सनातन वैदिक धर्म बाबत् उद्बोधन किया गया। ग्राम कचना के साहू समाज से सर्वश्री हेमन्त साहू, दयाराम साहू, चैनूराम साहू, कामता प्रसाद साहू, माधव साहू आदि द्वारा भी उद्बोधन किया गया। श्री रामकृष्ण साहू तरियापार कचना द्वारा भी उद्बोधन दिया गया और उन्होंने बताया कि वे किस प्रकार ईसाई मत की ओर अग्रसर हुये।

दोपहर ३.३० बजे भोजन अवकाश के बाद लगभग साढ़े चार बजे पुनः उसी सार्वजनिक स्थल पर एक बैठक आयोजित की गई, जिसमें साहू समाज के अध्यक्ष आदि बड़े-बड़े पदाधिकारी उपस्थित थे। बैठक में श्री दयाराम वर्मा प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, श्री छबिलसिंह रघुवंशी, श्री बोधनराम साहू सेवानिवृत राजस्व निरीक्षक, डॉ. कुलेश्वर निषाद, पं. सुशील स्वामी, श्री लाला राम शर्मा आदि द्वारा उद्बोधन दिया गया।

इस बैठक में श्री यशवंत गजेन्द्र, सर्वश्री चैनूराम साहू, प्रदीप कुमार साहू, खिलावन साहू, दुजराम साहू, नारायण साहू, कामताराम साहू, संतराम साहू, गजाधर साहू, चोवाराम साहू, शिवकुमार साहू, राधेलाल साहू, भैयाराम, रामकृष्ण साहू, तुकाराम, डिहूराम, नरोत्तम साहू, पुरुषोत्तम कुमार, हीरासिंह साहू, हेमन्त साहू, अलख राम साहू आदि उपस्थित थे। श्री टंडन जी प्राचार्य उ.मा. विद्यालय कचना द्वारा सारगर्भित उद्बोधन दिया गया। भजनोपदेशक पं. वेदपाल आर्य द्वारा पुनः भनजोपदेश का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

वेदप्रचार कार्यक्रम में श्री जितेन्द्र प्रकाश सल्होत्रा (उपप्रधान), श्री रवि आर्य (उपमंत्री) आदि सभा पदाधिकारी उपस्थित रहे। लगभग ४०० लोगों से अधिक की उपस्थिति रही। वेदप्रचार कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। ग्रामवासियों ने सभा प्रधान एवं आर्यसमाज बैजनाथपारा के प्रधान से निवेदन किया कि समय-समय पर इसी प्रकार वेदप्रचार का कार्यक्रम न सिर्फ कचना अपितु आस-पास के ग्राम खोरपा, संकरी, चंडी बाजार, मोहदी, भखारा आदि ग्रामों में भी आयोजित किया जावे।

संवाददाता - दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री

अन्तर्राष्ट्रीय मंच से अर्जुनदेव चड्ढा का ओजस्वी उद्बोधन

विश्व एड्स दिवस पर दक्षिण अफ्रीका के डरबन में दिया जागरुकता वक्तव्य

कोटा । अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिनांक २८ नवम्बर से १ दिसंबर २०१३ तक साऊथ अफ्रीका के डरबन महानगर में आयोजित हुआ जिसमें १ दिसंबर को कार्यक्रम का एक सत्र चिकित्सा विषय पर आधारित था । उस सत्र में लगभग आठ देशों के स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने डरबन के सिटी हॉल में सभा को सम्बोधित किया । चिकित्सा सत्र में भारत से कोटा राजस्थान के प्रतिनिधि श्री अर्जुनदेव चड्ढा को वक्तव्य के लिये मंच पर आमंत्रित किया गया । कार्यक्रम के संयोजक डॉ. रामविलास ने अर्जुनदेव चड्ढा का परिचय दिया । सभा को सम्बोधित करते हुए श्री चड्ढा जी ने कहा कि १ दिसंबर को विश्व एड्स दिवस है, अतः हमें एड्स बचाव जागरुकता पर अधिक बल देना होगा। एड्स बीमारी की जानकारी सर्वप्रथम साऊथ अफ्रीका से ही प्रारंभ हुई थी । श्री चड्ढा ने कहा कि एड्स बीमारी के बारे में विश्व भर में लोगों को सचेत किया जा रहा है कि हर जीवधारी में दो तरह की भूख होती है एक नाभि के ऊपर और एक नाभि के नीचे (शारीरिक) और दोनों ही भूख को शांत करने के लिए वह किसी भी हद तक जा सकता है । हम मानव है और हमें अच्छी तरह से अच्छे-बुरे का ज्ञान है । एड्स पीड़ित व्यक्ति से शारीरिक संबंध स्थापित करने से यह बीमारी गुणा के हिसाब से फैलती है । श्री चड्ढा जी ने एड्स के बारे में फैली भ्रामक विषयों की भी चर्चा की । हमें जागरुक होकर इस बीमारी से मानव जाति को बचाना होगा । श्री चड्ढा जी के ओजस्वी और भावपूर्ण वक्तत्व की सभी ने प्रशंसा कीजिसमें आचार्य बलदेव जी, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, डॉ. स्वामी देवव्रत, स्वामी आर्यवेश, ब्रह्मचारी राजसिंह, विनय आर्य, वाचोनिधि आर्य, धर्मपाल आर्य, प्रकाश आर्य, दयानन्द शर्मा (जोहन्सबर्ग) कार्यक्रम के संचालक डॉ. रामविलास व कई देशों के प्रतिनिधि उपस्थित थे ।

नामकरण संस्कार सम्पन्न

भैसबुड़ी (रायगढ़) । आर्यसमाज भैंसबुड़ी (रायगढ़) में श्री राजेश पत्नी श्रीमती उमिता के पुत्र चि. लक्षदेव का नामकरण संस्कार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें श्री महीपत आर्य सलखिया के ब्रह्मत्व एवं श्री शोभाराम आर्य, श्री रामेश्वर आर्य के सहयोग से सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर दीपक कुमार आर्य, प्रदीप कुमार आर्य वेदपाठी गुरुकुल आश्रम सलखिया से अधिक संख्या ग्रामीण जन उपस्थित थे ।

संवाददाता : घासीराम आर्य, मंत्री आर्यसमाज भैंसबुड़ी

पारिवारिक यज्ञ सम्पन्न

खुटापानी (जशपुर) । ग्राम खुटापानी (जशपुर) में श्री त्रिनाथराम आर्य, श्री महीपतलाल आर्य के सान्निध्य में बीरबल आर्य के सहयोग से वैदिक हवन, भजन, प्रवचन सम्पन्न हुआ । यजमान के रुप में श्री खुदानन्द सपत्नीक एवं श्री सुशील सपत्नीक रहे। इस अवसर पर ऋषिदेव आर्य, परमेश्वर आर्य, दीपक कुमार आर्य वेदपाठी, प्रचारक घनश्याम पैंकरा, बाबूलाल पैंकरा सहित शताधिक संख्या में आर्यजन उपस्थित रहे ।

संवाददाता : बीरबल आर्य, सभा प्रचारक

सत्य सनातन वैदिक धर्म का एक संक्षिप्त परिचय

१. वैदिक धर्म संसार के सब मतों और सम्प्रदायों से अधिक प्राचीन है। यह सृष्टि के आरम्भ से हैं।

२. संसार भर के अन्य मत, पंथ किसी पीर, पैगम्बर, मसीहा गुरू महात्मा आदि के द्वारा चलाये हुए हैं, किन्तु वैदिक धर्म ईश्वरीय है, किसी मनुष्य का चलाया हुआ नहीं है।

३. वैदिक धर्म में केवल एक सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, न्यायाकार, ईश्वर को ही पूज्य उपास्य माना जाता है उसी की उपासना की जाती है, अन्य देवी देवओं की नहीं।

४. ईश्वर अवतार नहीं लेता अर्थात् कभी भी शरीर में धारण नहीं करता।

५. जीव और ईश्वर (ब्रह्मा) एक नहीं है, बल्कि दोनों अलग-अलग हैं और प्रकृति इन दोनों से अलग तीसरी वस्तु है। ये तीनों अनादि हैं।

६. वैदिक धर्म के सब सिद्धान्त सृष्टि क्रम के नियमों के अनुकूल तथा वैज्ञानिक हैं। जबकि अन्य मतों के बहुत से सिद्धान्त विद्वान की कसौटी पर खरे नहीं उतरते।

७. हरिद्वार, काशी, मथुरा आदि तीर्थ नहीं है। तीर्थ तो विद्या का अध्ययन, यम नियमों का पालन, योगाभ्यास, सत्संग आदि है, जिससे मनुष्य दुःख से तर जाता है।

८. भूत, प्रेम, डाकिनी आदि के प्रचलित स्वरूप को वैदिक धर्म में स्वीकार नहीं किया जाता है, यह सब कल्पना मात्र है तथा मिथ्या है।

९. स्वर्ग और नरक किसी स्थान विशेष में नहीं होते। जहाँ सुख है वहाँ स्वर्ग है और जहाँ दुःख होता है। वहाँ नरक होता है।

१०. स्वर्ग के कोई अलग से देवता नहीं होते । माता, पिता, गुरू, विद्वान् तथा पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि ही स्वर्ग के देवता है।

११. राम, कृष्णा, ब्रह्मा, शिव, विष्णु आदि महापुरुष थे। न ही ईश्वर के अवतार थे।

१२. जो मनुष्य जैसे शुभ या अशुभ कर्म करता है उसको वैसा ही सुख या दुःख रूप फल अवश्य मिलता है। ईश्वर किसी भी मनुष्य के पाप को किसी परिस्थिति में क्षमा नहीं करता है।

१३. मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है, चाहे वह स्त्री हो या शूद्र।

१४. कर्म के आधार पर मानव समाज को चार भागों में बांटा जाता है जिन्हें चार वर्ण कहते हैं। (१) ब्राह्मण (२) क्षत्रिय (३) वैश्य (४) शूद्र।

१५. व्यक्तिगत जीवन को भी चार भागों में बाटा जाता है। इन्हें चार आश्रम भी कहते हैं। २५ वर्ष की अवस्था तक ब्रह्मचर्याश्रम, ५० वर्ष की अवस्था तक गृहस्थाश्राम, ७५ वर्ष की अवस्था तक वानप्रस्थाश्राम और इसके आगे संन्यासाश्रम माना गया है।

१६. जन्म से कोई भी व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नहीं होता। अपने गुण कर्म, स्वभाव से ब्राह्मण आदि कहलाते हैं। चाहे वे किसी के घर में उत्पन्न हुए हो। आर्य हमारा नाम है। सत्य हमारा कर्म। ओ३म् हमारा देव है। वेद हमारा धर्म है।

जनवरी 2014
CHH-HIN/2006/17407

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में,
श्रीमान् ____________________

प्रेषक :
अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग –491001 (छ.ग.)

आर्यसमाज सेक्टर–6 भिलाई का 54वाँ वार्षिकोत्सव की झलकियाँ

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिंटर्स, मॉडल टाऊन, भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया.